अध्याय १४

श्री चैतन्य महाप्रभु का कृष्ण-विरह भाव

अन्त्यलीला के चौदहवें अध्याय का सारांश श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने इस प्रकार दिया है। कृष्ण के विरह भाव से श्री चैतन्य महाप्रभु में अत्यधिक दिव्य उन्माद उत्पन्न हो गया। जब वे गरुड़ स्तम्भ के पास खड़े होकर भगवान् जगन्नाथ की स्तुति कर रहे थे, तब उड़ीसा की एक स्त्री ने जगन्नाथ के दर्शन पाने की उत्कट उत्सुकता के कारण महाप्रभु के कन्धे पर अपना पाँव रख दिया। इसके लिए गोविन्द ने उसकी भर्त्सना की, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु ने उसकी उत्सुकता की प्रशंसा की। जब चैतन्य महाप्रभु भगवान् जगन्नाथ के मन्दिर में गये, तब वे प्रेमाविष्ट हो गये और उन्होंने केवल कृष्ण का दर्शन किया। किन्तु ज्योंही उन्होंने इस स्त्री को देखा, तो उनकी बाह्य चेतना तुरन्त लौट आई और उन्होंने जगन्नाथ, बलदेव तथा सुभद्रा को देखा। श्री चैतन्य महाप्रभु ने स्वप्न में भी कृष्ण को देखा और वे प्रेमावेश में भावविभोर हो गये। जब उन्हें कृष्ण नहीं दिखे, तो उन्होंने अपनी तुलना एक योगी से की और बतलाया कि किस तरह वह योगी वृन्दावन को देख रहा है। कभी-कभी तो उनमें समस्त दिव्य भाव-लक्षण प्रकट हो आते थे। एक रात गोविन्द तथा स्वरूप दामोदर ने देखा कि यद्यपि महाप्रभु के कमरे के तीनों दरवाजे बन्द थे और ताला लगा था, किन्तु महाप्रभु उसके भीतर नहीं थे। यह देखकर स्वरूप दामोदर तथा अन्य भक्त बाहर गये और देखा कि महाप्रभु सिंहद्वार पर अचेतन होकर पड़े हुए हैं। उनका शरीर असामान्य रूप से लम्बा हो गया था और उनकी हड्डियों के जोड़ ढीले पड़ गये थे। भक्तों ने हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन करके श्री चैतन्य महाप्रभु को धीरे धीरे सचेत किया और तब उन्हें उनके निवासस्थान

पर ले गये। एक बार श्री चैतन्य महाप्रभु चटक पर्वत नामक बालू के एक टीले को गोवर्धन पर्वत समझ बैठे। ज्योंही वे उसकी ओर दौड़े, वे स्तब्ध हो गये और तब उनके शरीर में कृष्ण के प्रति अपार प्रेम के कारण आठों सात्विक भाव उत्पन्न हो गये। उस समय उन्हें शान्त करने के लिए सभी भक्तों ने हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन किया।

कृष्ण-विच्छेद-विभ्रान्त्या मनसा वपुषा धिया ।
यद् यद्व्यधत्त गौराङ्गस्तल्लेशः कथ्यतेऽधुना ॥ १॥

कृष्ण-विच्छेद-विभ्रान्त्या मनसा वपुषा धिया ।
यद् यद्व्यधत्त गौराङ्गस्तल्लेशः कथ्यतेऽधुना ॥ १॥

कृष्ण-विच्छेद—कृष्ण के विरह से; **विभ्रान्त्या**—भ्रान्ति; **मनसा**—मन से; **वपुषा**—शरीर से; **धिया**—बुद्धि से; **यत् यत्**—जो भी; **व्यधत्त**—किया; **गौराङ्गः**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **तत्**—उसका; **लेशः**—थोड़े अंश का; **कथ्यते**—वर्णन; **अधुना**—अब।

अनुवाद

अब मैं श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा मन, बुद्धि तथा शरीर से सम्पन्न कार्यकलापों के अत्यल्प अंश का वर्णन करूँगा, जब वे कृष्ण के तीव्र विरह भाव से मोहग्रस्त हो गये।

जय जय श्री-चैतन्य स्वयं भगवान् ।
जय जय गौरचन्द्र भक्त-गण-प्राण ॥ २॥

जय जय श्री-चैतन्य स्वयं भगवान् ।
जय जय गौरचन्द्र भक्त-गण-प्राण ॥ २॥

जय जय—जय जय; **श्री-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु की ; **स्वयम् भगवान्**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्; **जय जय**—जय जय; **गौर-चन्द्र**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **भक्त-गण-प्राण**—भक्तों के प्राण स्वरूप।

अनुवाद

पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! अपने भक्तों के प्राण स्वरूप गौरचन्द्र की जय हो!

জয় জয় নিত্যানন্দ চৈতন্য-জীবন ।
জয়াদ্বৈতাচার্য জয় গৌর-প্রিয়তম ॥ ৩ ॥

जय जय नित्यानन्द चैतन्य-जीवन ।
जयाद्वैताचार्य्य जय गौर-प्रियतम ॥ ३ ॥

जय जय—जय जय; **नित्यानन्द**—श्री नित्यानन्द प्रभु की; **चैतन्य-जीवन**—श्री चैतन्य महाप्रभु के जीवन; **जय**—जय हो; **अद्वैत-आचार्य्य**—अद्वैत आचार्य की; **जय**—जय हो; **गौर-प्रियतम**—श्री चैतन्य महाप्रभु के अत्यन्त प्रिय।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के जीवन रूप श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्री चैतन्य महाप्रभु के अत्यन्त प्रिय अद्वैत आचार्य की जय हो!

জয় স্বরূপ, শ্রীবাসাদি প্রভু-ভক্ত-গণ ।
শক্তি দেহ',—করি যেন চৈতন্য-বর্ণন ॥ ৪ ॥

जय स्वरूप, श्रीवासादि प्रभु-भक्त-गण ।
शक्ति देह',—करि येन चैतन्य-वर्णन ॥ ४ ॥

जय—जय हो; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर की; **श्रीवास-आदि**—श्रीवास ठाकुर आदि; **प्रभु-भक्त-गण**—भगवान् के भक्त गण; **शक्ति देह'**—कृपया शक्ति दीजिये; **करि**—मैं कर सकूँ; **येन**—जिससे; **चैतन्य-वर्णन**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरित्र का वर्णन।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर तथा श्रीवास ठाकुर इत्यादि सारे भक्तों की जय हो! आप लोग मुझे श्री चैतन्य महाप्रभु के चरित्र का वर्णन करने की शक्ति प्रदान करें।

প্রভুর বিরহোন্মাদ-ভাব গম্ভীর ।
বুঝিতে না পারে কেহ, যদ্যপি হয় 'ধীর' ॥ ৫ ॥

प्रभुर विरहोन्माद-भाव गम्भीर ।
बुझिते ना पारे केह, यद्यपि हय 'धीर' ॥ ५ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **विरह-उन्माद**—कृष्ण के विरह का दिव्य उन्माद; **भाव**—

भाव; **गम्भीर**—अत्यन्त गम्भीर; **बुझिते**—समझना; **ना पारे केह**—कोई भी नहीं; **यद्यपि**—यद्यपि; **हय**—यह; धीर—बहुत ही विद्वान पण्डित और प्रबुद्ध।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के कृष्णविरह के दिव्य उन्माद का भाव अत्यन्त गम्भीर तथा रहस्यमय है। कोई कितना ही प्रबुद्ध तथा विद्वान (धीर) क्यों न हो, वह इसे समझ नहीं सकता।

বুঝিতে না পারি যাহা, বর্ণিতে কে পারে? ।
সেই বুঝে, বর্ণে, চৈতন্য শক্তি দেন যাঁরে ॥৬॥

বুঝিতে না পারি যাহা, বর্ণিতে কে পারে? ।
সেই বুঝে, বর্ণে, চৈতন্য শক্তি দেন যাঁরে ॥ ৬ ॥

বুঝিতে—समझ पाना; **না পারি**—सम्भव नहीं है; **যাহা**—कौनसा विषय; **বর্ণিতে কে পারে**—कौन वर्णन कर सकता है; **সেই বুঝে**—वह समझ सकता है; **বর্ণে**—वर्णन कर सकता है; **চৈতন্য**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **শক্তি**—शक्ति; **দেন**—देना; **যাঁরে**—उसे।

अनुवाद

भला कोई इन अगाध विषयों का वर्णन कैसे कर सकता है? यह तभी सम्भव है, जब श्री चैतन्य महाप्रभु उसे शक्ति प्रदान करें।

স্বরূপ-গোসাঞি আর রঘুনাথ-দাস ।
এই দুইর কড়চাতে এ-লীলা প্রকাশ ॥৭॥

স্বরূপ-গোসাঞি আর রঘুনাথ-দাস ।
এই দুইর কড়চাতে এ-লীলা প্রকাশ ॥ ৭ ॥

স্বরূপ-গোসাঞি—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **আর**—और; **রঘুনাথ-দাস**—रघुनाथ दास गोस्वामी; **এই দুইর**—इन दोनों ने; **কড়চাতে**—स्मरणिका में; **এ-লীলা**—ये लीलाएँ; **প্রকাশ**—वर्णित की।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रघुनाथ दास गोस्वामी ने श्री चैतन्य महाप्रभु के इन समस्त दिव्य कार्यकलापों को अपनी स्मरणिका में लिपिबद्ध किया है।

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु के कृष्ण-विरह के दिव्य भाव को तथा उसके फलस्वरूप उनके उन्माद को भौतिक स्तर पर स्थित व्यक्ति नहीं समझ सकता। तो भी *नदीया-नागरी* नामक भक्तों की एक तथाकथित टोली का सूत्रपात हुआ है, जिसने विष्णुप्रिया की पूजा चालू की है। इससे श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं के विषय में उनकी अज्ञानता उजागर होती है। भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर के मतानुसार ऐसी पूजा कल्पना की उपज है। इसके अतिरिक्त भी चैतन्य महाप्रभु की पूजा की अन्य अनेक विधियों का सूत्रपात हुआ है, किन्तु भक्तिविनोद ठाकुर जैसे अग्रणी भक्तों ने इन सबों का बहिष्कार कर दिया है। ऐसी अवैध पूजा करने वाली टोलियों की सूची श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने दी है :

आउल, बाउल, कर्त्ताभाजा, नेड़ा, दरवेश, साँइं
सहजिया, सखीभेकी, स्मार्त, जात-गोसाँइ
अतिवाड़ी, चूड़ाधारी, गौराङ्ग-नागरी।

स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रघुनाथ दास गोस्वामी ने श्री चैतन्य महाप्रभु के कार्यकलापों को स्वयं अपनी आँखो से देखा था और उन्होंने इनको दो स्मरणिकाओं में लिपिबद्ध किया है। अतएव इन स्मरणिकाओं का सन्दर्भ लिये बिना श्री चैतन्य महाप्रभु के कार्यकलापों को व्यक्ति समझ नहीं सकता। श्री चैतन्य महाप्रभु की पूजा करने के लिए नई विधि की खोज करने वाला कोई भी व्यक्ति महाप्रभु की लीलाओं को समझने में असमर्थ है, क्योंकि वह महाप्रभु के पास पहुँचने की वास्तविक विधि से वंचित है।

সে-কালে এ-দুই রহেন মহাপ্রভুর পাশে ।
আর সব কড়চা-কর্তা রহেন দূর-দেশে ॥৮॥

से-काले ए-दुइ रहेन महाप्रभुर पाशे ।
आर सब कड़चा-कर्ता रहेन दूर-देशे ॥८॥

से-काले—उन दिनों; **ए-दुइ**—वे दोनों; **रहेन**—रहते; **महाप्रभुर पाशे**—श्री चैतन्य

महाप्रभु के साथ; **आर**—और; **सब**—सब; **कड़चा-कर्ता**—टीकाकार; **रहेन**—अन्य सारे; **दूर-देशे**—दूर रहते।

अनुवाद

उन दिनों स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रघुनाथ दास गोस्वामी ही श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ रहते थे, जबकि अन्य सारे टीकाकार उनसे बहुत दूर रहते थे।

तात्पर्य

स्वरूप दामोदर तथा रघुनाथ दास गोस्वामी के अतिरिक्त अन्य अनेक लोग थे, जिन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु के कार्यकलापों को लिपिबद्ध किया। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर का विश्वास है कि यदि ऐसे विवरण उपलब्ध होते, तो संसार के लोग अत्यधिक लाभान्वित होते। किन्तु मानव-समाज की यह सबसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि इनमें से कोई भी स्मरणिका आज विद्यमान नहीं है।

क्षणे क्षणे अनुभवि' एइ दुइ-जन ।
सङ्क्षेपे बाहुल्ये करेन कड़चा-ग्रन्थन ॥९॥

क्षणे क्षणे अनुभवि' एइ दुइ-जन ।
सङ्क्षेपे बाहुल्ये करेन कड़चा-ग्रन्थन ॥ ९ ॥

क्षणे क्षणे—क्षण क्षण के; **अनुभवि'**—अनुभव; **एइ दुइ-जन**—इन दोनों ने; **सङ्क्षेपे**—संक्षिप्त में; **बाहुल्ये**—विस्तारपूर्वक; **करेन**—किया; **कड़चा-ग्रन्थन**—स्मरणिका में संग्रहित।

अनुवाद

इन दो महापुरुषों (स्वरूप दामोदर तथा रघुनाथ दास गोस्वामी) ने महाप्रभु के क्षण-क्षण के कार्यकलापों को लिपिबद्ध किया है। उन्होंने अपनी स्मरणिकाओं में इन कार्यकलापों का संक्षेप तथा विस्तृत—दोनों ही का वर्णन किया है।

तात्पर्य

भविष्य के सन्दर्भ हेतु हमें स्मरण रखना चाहिए कि स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने लीलाओं को संक्षेप में और रघुनाथ दास गोस्वामी ने विस्तार से

लिपिबद्ध किया। इन दोनों महापुरुषों ने तथ्यों को केवल लिपिबद्ध किया है; उन्होंने कोई वर्णनात्मक साहित्यिक अलंकरण का सृजन नहीं किया।

स्वरूप—'सूत्र-कर्ता', रघुनाथ—'वृत्तिकार' ।
तार बाहुल्य वर्णि—पाँजि-टीका-व्यवहार ॥ १० ॥

स्वरूप—'सूत्र-कर्ता', रघुनाथ—'वृत्तिकार' ।
तार बाहुल्य वर्णि—पाँजि-टीका-व्यवहार ॥ १० ॥

स्वरूप—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **सूत्र-कर्ता**—संक्षिप्त टिप्पणी; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास गोस्वामी; **वृत्ति-कार**—व्याख्यात्मक विस्तारपूर्वक कार्य करनेवाले; **तार**—उनका; **बाहुल्य**—अधिक विस्तार से; **वर्णि**—मैं वर्णन करूँगा; **पाँजि**—रुई को धुना; **टीका**—व्याख्या; **व्यवहार**—व्यवहार।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने संक्षेप में लिखा, जबकि रघुनाथ दास गोस्वामी ने विस्तृत वर्णन लिखे। अब मैं श्री चैतन्य महाप्रभु के कार्यकलापों का वर्णन अधिक विस्तार से करूँगा, मानो दबी हुई रुई को धुना जा रहा हो।

तात्पर्य

पाँजि-टीका का अर्थ है विषय की और आगे व्याख्या करना। ऐसी व्याख्याएँ लिखना रुई धुनने के समान हैं।

तातें विश्वास करि' शुन भावेर वर्णन ।
ह-इबे भावेर ज्ञान, पाइबा प्रेम-धन ॥ ११ ॥

तातें विश्वास करि' शुन भावेर वर्णन ।
ह-इबे भावेर ज्ञान, पाइबा प्रेम-धन ॥ ११ ॥

तातें—इस तरह; **विश्वास करि'**—श्रद्धा रखें; **शुन**—कृपया सुनें; **भावेर वर्णन**—प्रेम भावों का वर्णन; **ह-इबे**—होगा; **भावेर**—प्रेवावेश; **ज्ञान**—ज्ञान; **पाइबा**—आप पा सकते हैं; **प्रेम-धन**—कृष्ण का प्रेम।

अनुवाद

कृपया श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रेम-भावों का यह वर्णन श्रद्धापूर्वक

सुनें। इस तरह आप उनके प्रेमावेश को जान सकेंगे और अन्त में भगवत्प्रेम प्राप्त करेंगे।

কৃষ্ণ মথুরায় গেলে, গোপীর যে দশা হৈল ।
কৃষ্ণ-বিচ্ছেদে প্রভুর সে দশা উপজিল ॥ ১২॥

कृष्ण मथुराय गेले, गोपीर ये दशा हैल ।
कृष्ण-विच्छेदे प्रभुर से दशा उपजिल ॥ १२॥

कृष्ण मथुराय गेले—भगवान् कृष्ण मथुरा जाने पर; **गोपीर**—गोपियों की; **ये दशा**—क्या दशा; **हैल**—हुई; **कृष्ण-विच्छेदे**—कृष्ण के विरह से; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **से दशा**—वही दशा; **उपजिल**—हो गई है।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु को कृष्ण का विरह संतप्त करता, तो उनकी दशा वैसी ही हो जाती, जैसी कि कृष्ण के मथुरा जाने पर वृन्दावान में गोपियों की हो गई थी।

উদ্ধব-দর্শনে যৈছে রাধার বিলাপ ।
ক্রমে ক্রমে হৈল প্রভুর সে উন্মাদ-বিলাপ ॥ ১৩॥

उद्धव-दर्शने यैछे राधार विलाप ।
क्रमे क्रमे हैल प्रभुर से उन्माद-विलाप ॥ १३॥

उद्धव-दर्शने—उद्धव को देखने पर; **यैछे**—जैसे; **राधार**—श्रीमती राधारानी का; **विलाप**—विलाप; **क्रमे क्रमे**—क्रमशः; **हैल**—हो गया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **से**—वह; **उन्माद-विलाप**—पागलपन में विलाप।

अनुवाद

उद्धव के वृन्दावन आने पर श्रीमती राधारानी का शोक क्रमशः श्री चैतन्य महाप्रभु के दिव्य उन्माद का अंग बन गया।

রাধিকার ভাবে প্রভুর সদা 'অভিমান' ।
সেই ভাবে আপনাকে হয় 'রাধা'-জ্ঞান ॥ ১৪॥

राधिकार भावे प्रभुर सदा 'अभिमान' ।
सेइ भावे आपनाके हय 'राधा'-ज्ञान ॥ १४॥

राधिकार भावे—श्रीमती राधारानी के भाव में; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **सदा**—सदैव; **अभिमान**—कल्पित करना; **सेइ भावे**—वही भाव; **आपनाके**—स्वयं ही; **हय**—हो गये; **राधा-ज्ञान**—श्रीमती राधारानी हैं।

अनुवाद

उद्धव से मिलते समय श्रीमती राधारानी के जो भाव थे, श्री चैतन्य महाप्रभु के वही भाव हो गये। महाप्रभु अपने आपको सदैव राधारानी के स्थान पर कल्पित करते और कभी-कभी सोचते कि वे ही स्वयं श्रीमती राधारानी हैं।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर बतलाते हैं कि *अभिमान* शब्द या "स्वयं की पहचान" का तात्पर्य यह है कि श्री चैतन्य महाप्रभु अपने आपको श्रीमती राधारानी के स्थान पर मानते थे और कृष्ण की इसी प्रकार से सेवा करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। यद्यपि श्री चैतन्य महाप्रभु स्वयं कृष्ण हैं, किन्तु उन्होंने श्रीमती राधारानी का रंग तथा भाव धारण कर रखा था और वे उसी तरह रहे। उन्होंने कभी भी भगवान् कृष्ण का रंग या स्थान ग्रहण नहीं किया। निस्सन्देह, कृष्ण ने श्रीमती राधारानी की भूमिका का अनुभव करना चाहा था। यही मूल कारण है कि उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु का शरीर धारण किया। इसलिए शुद्ध वैष्णवजन कभी भी श्री चैतन्य महाप्रभु को श्रीमती राधारानी होने के भाव में बाधा नहीं डालते।

दुर्भाग्यवश सम्प्रति तथाकथित भक्तों का एक ऐसा समुदाय है, जो यह मानता है कि श्री चैतन्य महाप्रभु भोक्ता हैं और वे लोग भी भोक्ता हैं। वस्तुतः वे भगवान् की भक्ति से भटक गये हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु ने यह प्रदर्शित करने के लिए अपने आपको प्रकट किया है कि विरह में कृष्ण से प्रेम का अनुशीलन करना ही समस्त जीवों के लिए सफलता का सबसे सुगम साधन है। इतना होते हुए भी कुछ ऐसे अध्यात्मविद् हैं, जो यह घोषित करते हैं कि चूँकि श्री चैतन्य महाप्रभु पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं, अतः ऐसा अनुशीलन उनके लिए तो आसान

है, किन्तु जीव के लिए कठिन है; इसलिए मनुष्य खुद जो चाहे ऐसे किसी भी मार्ग से कृष्ण के पास पहुँच सकता है। इस विचार का खंडन करने के लिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने यह व्यावहारिक रूप से प्रदर्शित किया कि कृष्ण के विरह में श्रीमती राधारानी का भाव ग्रहण करके किस प्रकार कृष्ण-प्रेम को प्राप्त किया जा सकता है।

दिव्योन्मादे ऐछे हय, कि इहा विस्मय? ।
अधिरूढ़-भावे दिव्योन्माद-प्रलाप हय ॥ १५ ॥

दिव्योन्मादे ऐछे हय, कि इहा विस्मय? ।
अधिरूढ़-भावे दिव्योन्माद-प्रलाप हय ॥ १५ ॥

दिव्य-उन्मादे—दिव्य उन्माद में; **ऐछे**—ऐसा; **हय**—है; **कि इहा विस्मय**—क्या आश्चर्य है; **अधिरूढ़-भावे**—कृष्ण के प्रेम का भाव; **दिव्य-उन्माद**—दिव्य उन्माद में; **प्रलाप**—बातें; **हय**—होती है।

अनुवाद

दिव्य उन्माद की अवस्था ऐसी है। इसे समझना कठिन क्यों है? जब कोई कृष्ण-प्रेम में अत्यधिक उन्नति कर जाता है, तो वह दिव्य रूप से उन्मत्त होकर, उन्मत्त की तरह बातें करता है।

एतस्य मोहनाख्यस्य
गतिं कामप्युपेयुषः
भ्रमाभा कापि वैचित्री
दिव्योन्माद इतीर्यते
उदघूर्णा-चित्र-जल्पाद्यास्
तद्भेदा बहवो मताः

एतस्य मोहनाख्यस्य
गतिं कामप्युपेयुषः
भ्रमाभा कापि वैचित्री
दिव्योन्माद इतीर्यते
उद्घूर्णा-चित्र-जल्पाद्यास्
तद्भेदा बहवो मताः ॥ १६ ॥

एतस्य—इसका; **मोहन-आख्यस्य**—मोहन भाव; **गतिम्**—प्रगति; **काम् अपि**—अस्पष्ट; **उपेयुषः**—प्राप्त करके; **भ्रम-आभा**—भ्रम के समान; **का अपि**—कुछ; **वैचित्री**—आश्चर्य की स्थिति; **दिव्य-उन्माद**—दिव्य उन्माद; **इति**—इस प्रकार; **ईर्य्यते**—कहलाता है; **उद्घूर्णा**—उद्घूर्णा; **चित्र-जल्प**—चित्रजल्प; **आद्याः**—इत्यादि; **तत्-भेदाः**—इसके विभिन्न लक्षण; **बहवः**—अनेक; **मताः**—वर्णन किये जाते हैं।

अनुवाद

"जब मोहन भाव की क्रमशः वृद्धि होती है, तब यह भ्रम के समान हो जाता है। तब वैचित्री अर्थात् आश्चर्य की अवस्था प्राप्त होती है, जो दिव्य उन्माद को जागृत करती है। दिव्योन्माद के अनेक विभागों में से उद्घूर्णा तथा चित्रजल्प दो हैं।"

तात्पर्य

यह उद्धरण *उज्ज्वल नीलमणि* (स्थायीभाव प्रकरण १७४) का है।

एक-दिन महाप्रभु करियाछेन शयन ।
कृष्ण रास-लीला करे,—देखिला स्वपन ॥ १७॥

एक-दिन महाप्रभु करियाछेन शयन ।
कृष्ण रास-लीला करे,—देखिला स्वपन ॥ १७॥

एक-दिन—एक दिन; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करियाछेन शयन**—विश्राम कर रहे थे; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **रास-लीला करे**—रास नृत्य करते; **देखिला**—उन्होंने देखा; **स्वपन**—स्वप्न।

अनुवाद

एक दिन श्री चैतन्य महाप्रभु जब विश्राम कर रहे थे, तब उन्होंने स्वप्न देखा कि कृष्ण रास नृत्य कर रहे हैं।

त्रिभङ्ग-सुन्दर-देह, मुरली-वदन ।
पीताम्बर, वन-माला, मदन-मोहन ॥ १८॥

त्रिभङ्ग-सुन्दर-देह, मुरली-वदन ।
पीताम्बर, वन-माला, मदन-मोहन ॥ १८॥

त्रि-भङ्ग—तीन स्थानों में मुड़े हुए; **सुन्दर**—सुन्दर; **देह**—शरीर; **मुरली-वदन**—मुँह में

मुरली के साथ; **पीत-अम्बर**—पीले वस्त्रों के साथ; **वन-माला**—फूलों की माला; **मदन-मोहन**—कामदेव को मोहित करते हुए।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने देखा कि भगवान् कृष्ण खड़े हैं और उनका सुन्दर शरीर तीन स्थानों से मुड़ा है और वे अपने अधरों पर मुरली धारण किये हुए हैं। पीतवस्त्र तथा वन्य फूलों की माला पहने वे कामदेव को भी मोहित करने वाले दिख रहे थे।

মণ্ডলী-বন্ধে গোপী-গণ করেন নর্তন ।
মধ্যে রাধা-সহ নাচে ব্রজেন্দ্র-নন্দন ॥১৯॥

मण्डली-बन्धे गोपी-गण करेन नर्तन ।
मध्ये राधा-सह नाचे व्रजेन्द्र-नन्दन ॥१९॥

मण्डली-बन्धे—वृत्त में; **गोपी-गण**—गोपियाँ; **करेन नर्तन**—नृत्य करती हुईं; **मध्ये**—बीच में; **राधा-सह**—श्रीमती राधारानी के साथ; **नाचे**—नाचते; **व्रजेन्द्र-नन्दन**—महाराज नन्द के पुत्र कृष्ण।

अनुवाद

गोपियाँ एक वृत्त में नृत्य कर रही थीं और इस वृत्त के बीच में महाराज नन्द के पुत्र कृष्ण, राधारानी के साथ नृत्य कर रहे थे।

দেখি' প্রভু সেই রসে আবিষ্ট হৈলা ।
'বৃন্দাবনে কৃষ্ণ পাইনু'—এই জ্ঞান কৈলা ॥২০॥

देखि' प्रभु सेइ रसे आविष्ट हैला ।
'वृन्दावने कृष्ण पाइनु'—एइ ज्ञान कैला ॥२०॥

देखि'—देखकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सेइ**—वह; **रसे**—दिव्य रस में; **आविष्ट हैला**—अभिभूत हो गये; **वृन्दावने**—वृन्दावन में; **कृष्ण पाइनु**—मैंने कृष्ण को पाया; **एइ**—यह; **ज्ञान कैला**—उन्होंने सोचा।

अनुवाद

यह देखकर श्री चैतन्य महाप्रभु रास नृत्य के दिव्य रस से अभिभूत हो गये और उन्होंने सोचा, "अब मैं कृष्ण के साथ वृन्दावन में हूँ।"

প্রভুর বিলম্ব দেখি' গোবিন্দ জাগাইলা ।
জাগিলে 'স্বপ্ন'-জ্ঞান হৈল, প্রভু দুঃখী হৈলা ॥২১॥

প্রভুর বিলম্ব দেখি' গোবিন্দ জাগাইলা ।
জাগিলে 'স্বপ্ন'-জ্ঞান হৈল, প্রভু দুঃখী হৈলা ॥ ২১ ॥

প্রভুর—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **विलम्ब**—देर करते; **देखि'**—देखकर; **गोविन्द**—गोविन्द ने; **जागाइला**—उन्हें जगाया; **जागिले**—जब वे जगे; **स्वप्न-ज्ञान हैल**—वे समझ गये कि वह केवल स्वप्न था; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **दुःखी हैला**—दुःखी हुए।

अनुवाद

जब गोविन्द ने देखा कि महाप्रभु अभी तक नहीं जागे हैं, तो उसने उन्हें जगाया। यह जानकर कि वे मात्र स्वप्न देख रहे थे, महाप्रभु कुछ-कुछ दुःखी हुए।

দেহাভ্যাসে নিত্য-কৃত্য করি' সমাপন ।
কালে যাই' কৈলা জগন্নাথ দরশন ॥২২॥

দেহাভ্যাসে নিত্য-কৃত্য করি' সমাপন ।
কালে যাই' কৈলা জগন্নাথ দরশন ॥ ২২ ॥

দেহ-অভ্যাসে—आदत से; **নিত্য-কৃত্য**—नित्य कृत्य; **করি' সমাপন**—सम्पन्न किये; **কালে**—ठीक समय पर; **যাই'**—जाकर; **কৈলা**—किया; **জগন্নাথ দরশন**—भगवान् जगन्नाथ का दर्शन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने नित्य कृत्य सम्पन्न किये और ठीक समय पर वे मन्दिर में भगवान् जगन्नाथजी का दर्शन करने गये।

যাবত্কাল দর্শন করেন গরুড়ের পাছে ।
প্রভুর আগে দর্শন করে লোক লাখে লাখে ॥২৩॥

যাবত্ কাল দর্শন করেন গরুড়ের পাছে ।
প্রভুর আগে দর্শন করে লোক লাখে লাখে ॥ ২৩ ॥

যাবত্ কাল—जब तक; **দর্শন**—दर्शन; **করেন**—किया; **গরুড়ের পাছে**—गरुड़ स्तंभ के

पीछे से; **प्रभुर आगे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के सामने; **दर्शन करे**—दर्शन कर रहे; **लोक**—लोग; **लाखे लाखे**—लाखों।

अनुवाद

जब उन्होंने गरुड़ स्तम्भ के पीछे से भगवान् जगन्नाथ का दर्शन किया, तब उनके सामने लाखों लोग अर्चाविग्रह का दर्शन कर रहे थे।

উড়িয়া এক স্ত্রী ভীড়ে দর্শন না পাঞা ।
গরুড়ে চড়ি' দেখে প্রভুর স্কন্ধে পদ দিয়া ॥২৪॥

উড়িয়া এক স্ত্রী ভীড়ে দর্শন না পাঞা ।
গরুড়ে চড়ি' দেখে প্রভুর স্কন্ধে পদ দিয়া ॥ ২৪॥

উড়িয়া—উড়িয়া; **এক**—এক; **স্ত্রী**—स्त्री; **भीड़े**—भीड़ में; **दर्शन ना पाञा**—दर्शन न पाकर; **गरुड़े चड़ि'**—गरुड़ स्तंभ पर चढ़ गई; **देखे**—देखने; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **स्कन्धे**—कन्धे पर; **पद**—पैर; **दिया**—रख दिया।

अनुवाद

भीड़ के कारण भगवान् जगन्नाथ का दर्शन न कर पाने के कारण एक उड़िया स्त्री सहसा श्री चैतन्य महाप्रभु के कन्धे पर अपना पाँव रखकर गरुड़ स्तम्भ पर चढ़ गई।

দেখিয়া গোবিন্দ আস্তে-ব্যস্তে স্ত্রীকে বর্জিলা ।
তারে নামাইতে প্রভু গোবিন্দে নিষেধিলা ॥২৫॥

দেখিয়া গোবিন্দ আস্তে-ব্যস্তে স্ত্রীকে বর্জিলা ।
তারে নামাইতে প্রভু গোবিন্দে নিষেধিলা ॥ ২৫॥

देखिया—देखकर; **गोविन्द**—श्री चैतन्य महाप्रभु के निजी सहायक; **आस्ते-व्यस्ते**—शीघ्रता से; **स्त्रीके**—स्त्री को; **वर्जिला**—नीचे उतारा; **तारे**—उनको; **नामाइते**—नीचे उतरने के लिए; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **गोविन्दे**—गोविन्द; **निषेधिला**—रोका।

अनुवाद

यह देखकर चैतन्य महाप्रभु के निजी सहायक गोविन्द ने शीघ्रता से उसे वहाँ से नीचे उतारा। किन्तु इसके लिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने गोविन्द की भर्त्सना की।

तात्पर्य

चूँकि गरुड़ भगवान् विष्णु के वाहन हैं, अतएव वे परम वैष्णव हैं। अतएव उनके शरीर को अपने पाँव से छुना या गरुड़ स्तम्भ पर चढ़ना निश्चय ही वैष्णव-अपराध है। वह स्त्री कृष्ण के प्रति भी अपराधिनी थी, क्योंकि वह श्री चैतन्य महाप्रभु के कन्धे पर अपना पाँव रखे थी। इन अपराधों को देखते हुए गोविन्द ने उसे शीघ्रता से नीचे उतारा।

'आदि-वस्या' एइ स्त्रीरे ना कर वर्जन ।
करुक यथेष्ट जगन्नाथ दरशन ॥२६॥

'आदि-वस्या' एइ स्त्रीरे ना कर वर्जन ।
करुक यथेष्ट जगन्नाथ दरशन ॥ २६ ॥

आदि-वस्या—असभ्य पुरुष; **एइ**—इस; **स्त्रीरे**—स्त्री को; **ना कर वर्जन**—मत रोकना; **करुक**—उसे करने दो; **यथा-इष्ट**—इच्छापूर्वक; **जगन्नाथ दरशन**—भगवान् जगन्नाथ के दर्शन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने गोविन्द से कहा, "रे आदिवस्या (असभ्य पुरुष), इस स्त्री को गरुड़-स्तम्भ पर चढ़ने से मना मत करो। उसे जी भरकर जगन्नाथजी का दर्शन करने दो।"

तात्पर्य

आदि-वस्या की अन्य व्याख्या के लिए देखें *अन्त्यलीला* अध्याय १० श्लोक ११६।

आस्ते-व्यस्ते सेई नारी भूमेते नामिला ।
महाप्रभूरे देखि' ताँर चरण वन्दिला ॥२७॥

आस्ते-व्यस्ते सेइ नारी भूमेते नामिला ।
महाप्रभुरे देखि' ताँर चरण वन्दिला ॥ २७ ॥

आस्ते-व्यस्ते—बहुत जल्दी से; **सेइ नारी**—वह स्त्री; **भूमेते**—भूमि पर; **नामिला**—उतर गई; **महाप्रभुरे देखि'**—श्री चैतन्य महाप्रभु को देखकर; **ताँर**—उनके; **चरण वन्दिला**—चरणकमलों की याचना की।

अनुवाद

किन्तु जब उस स्त्री को ज्ञात हुआ, तो वह तुरन्त भूमि पर उतर आई और श्री चैतन्य महाप्रभु को देखकर उसने तुरन्त ही क्षमा करने के लिए उनके चरणकमलों पर याचना की।

তার আর্তি দেখি' প্রভু কহিতে লাগিলা ।
"এত আর্তি জগন্নাথ মোরে নাহি দিলা! ॥২৮॥

তার আর্তি দেখি' প্রভু কহিতে লাগিলা ।
"এত আর্তি জগন্নাথ মোরে নাহি দিলা! ॥ ২৮ ॥

তার—उसकी; **আর্তি**—उत्सुकता; **দেখি'**—देखकर; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **কহিতে লাগিলা**--कहने लगे; **এত আর্তি**—इतनी उत्सुकता; **জগন্নাথ**—भगवान् जगन्नाथ; **মোরে**—मुझ पर; **নাহি দিলা**—नहीं दी।

अनुवाद

उस स्त्री की उत्सुकता को देखकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा "जगन्नाथ जी ने मुझे इतनी उत्सुकता प्रदान नहीं की।

तात्पर्य

वह स्त्री भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने के लिए इतनी उत्सुक थी कि वह यह भूल गई कि गरुड़ स्तम्भ पर चढ़कर वह वैष्णव चरणों पर अपराध कर रही है। उसने इसकी भी चिन्ता नहीं की कि श्री चैतन्य महाप्रभु के कन्धे पर अपना पाँव रखकर उसने भगवान् के प्रति अपराध किया है। ये दोनों ऐसे गम्भीर अपराध हैं, जो भगवान् तथा वैष्णवों को अप्रसन्न करने वाले हैं। किन्तु वह भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने के लिए इतनी उत्सुक थी कि उसने उन सारे अपराधों पर ध्यान तक नहीं दिया। श्री चैतन्य महाप्रभु ने उसकी उत्सुकता की प्रशंसा की। उन्होंने खेद व्यक्त किया कि भगवान् जगन्नाथ ने उन्हें इतनी उत्सुकता प्रदान नहीं की।

জগন্নাথে আবিষ্ট ইহার তনু-মন-প্রাণে ।
মোর স্কন্ধে পদ দিয়াছে, তাহো নাহি জানে ॥২৯॥

जगन्नाथे आविष्ट इहार तनु-मन-प्राणे ।
मोर स्कन्धे पद दियाछे, ताहो नाहि जाने ॥ २९ ॥

जगन्नाथे—भगवान् जगन्नाथ में; **आविष्ट**—पूर्णतया मग्न; **इहार**—उस स्त्री का; **तनु**—तन; **मन**—मन; **प्राणे**—प्राण; **मोर स्कन्धे**—मेरे कन्धे पर; **पद**—पैर; **दियाछे**—रखा; **ताहो**—वह; **नाहि जाने**—नहीं जानती।

अनुवाद

"उसने पूरी तरह से अपना शरीर, मन तथा प्राण भगवान् जगन्नाथ में निमग्न कर दिया है। इसलिए उसे पता नहीं चला कि उसने मेरे कन्धे पर अपना पाँव रखा है।

अहो भाग्यवती एइ, वन्दि इहार पाय ।
इहार प्रसादे ऐछे आर्ति आमार वा हय" ॥ ३० ॥

अहो—ओह!; **भाग्यवती**—अत्यन्त भाग्यशालिनी; **एइ**—वह; **वन्दि**—मैं वन्दना करता हूँ; **इहार पाय**—उसके चरणों की; **इहार प्रसादे**—उसकी कृपा से; **ऐछे**—ऐसी; **आर्ति**—उत्सुकता; **आमार वा हय**—मुझे मिले।

अनुवाद

"ओह! यह स्त्री कितनी भाग्यशालिनी है! मैं उसके चरणों की वन्दना करता हूँ कि वह जगन्नाथ जी का दर्शन करने की अपनी महान् उत्सुकता मुझे प्रदान करे।"

पूर्वे आसि' यबे कैला जगन्नाथ दरशन ।
जगन्नाथे देखे—साक्षात्व्रजेन्द्र-नन्दन ॥ ३१ ॥

पूर्वे—इसके पूर्व; **आसि'**—आ रहे हैं; **यबे**—जब; **कैला**—किया; **जगन्नाथ दरशन**—भगवान् जगन्नाथ के दर्शन; **जगन्नाथे देखे**—भगवान् जगन्नाथ के दर्शन; **साक्षात् व्रजेन्द्र-नन्दन**—महाराज नन्द के पुत्र कृष्ण को साक्षात्।

अनुवाद

इसके पूर्व श्री चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथ जी को साक्षात् महाराज नन्द के पुत्र कृष्ण के रूप में देखते आ रहे थे।

स्वप्नेर दर्शनावेशे तद्रूप हैल मन ।
याहाँ ताहाँ देखे सर्वत्र मुरली-वदन ॥ ३२ ॥
स्वप्नेर दर्शनावेशे तद्रूप हैल मन ।
याहाँ ताहाँ देखे सर्वत्र मुरली-वदन ॥ ३२ ॥

स्वप्नेर—स्वप्न के; **दर्शन-आवेशे**—उस दृश्य में पूर्णतया निमग्न होकर; **तत्-रूप**—उसी तरह; **हैल मन**—मन हुआ; **याहाँ ताहाँ**—यहाँ वहाँ; **देखे**—देखते; **सर्वत्र**—सभी जगह; **मुरली-वदन**—उन्हें होठों पर अपनी मुरली रखे कृष्ण।

अनुवाद

उस दृश्य में पूर्णतया मग्न होकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने गोपियों का भाव धारण कर लिया था, यहाँ तक कि वे जहाँ भी देखते, उन्हें होठों पर अपनी मुरली रखे कृष्ण खड़े दिखाई देते।

एबे यदि स्त्रीरे देखि' प्रभुर बाह्य हैल ।
जगन्नाथ-सुभद्रा-बलरामेर स्वरूप देखिल ॥ ३३ ॥
एबे यदि स्त्रीरे देखि' प्रभुर बाह्य हैल ।
जगन्नाथ-सुभद्रा-बलरामेर स्वरूप देखिल ॥ ३३ ॥

एबे—अब; **यदि**—यदि; **स्त्रीरे**—स्त्री; **देखि'**—देखने पर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **बाह्य हैल**—बाह्य चेतना; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **सुभद्रा**—उनकी बहन, सुभद्रा; **बलरामेर**—उनके बड़े भाई, बलराम; **स्वरूप**—रूपों में; **देखिल**—देखा।

अनुवाद

उस स्त्री को देखने के बाद महाप्रभु की बाह्य चेतना लौट आई और उन्होंने भगवान् जगन्नाथ, सुभद्रा तथा बलराम जी के मूल अर्चाविग्रह रूपों को देखा।

কুরুক্ষেত্রে দেখি' কৃষ্ণে ঐছে হৈল মন ।
'কাহাঁ কুরুক্ষেত্রে আইলাঙ, কাহাঁ বৃন্দাবন?' ॥৩৪॥

কুরুক্ষেত্রে দেখি' কৃষ্ণে ঐছে হৈল মন ।
'কাহাঁ কুরুক্ষেত্রে আইলাঙ, কাহাঁ বৃন্দাবন?' ॥ ৩৪॥

কুরুক্ষেত্রে—কুরুক্ষেত্र में; **দেখি'**—देखकर; **কৃষ্ণে**—भगवान् कृष्ण; **ঐছে**—उस तरह; **হৈল মন**—उनके मन में आया; **কাহাঁ**—कहाँ; **কুরুক্ষেত্রে আইলাঙ**—मैं कुरुक्षेत्र में आया हूँ; **কাহাঁ**—कहाँ; **বৃন্দাবন**—वृन्दावन।

अनुवाद

जब उन्होंने अर्चाविग्रहों को देखा, तो उन्होंने सोचा कि वे कृष्ण को कुरुक्षेत्र में देख रहे हैं। उन्होंने सोचा, "क्या मैं कुरुक्षेत्र में आ गया हूँ? वृन्दावन कहाँ है?"

প্রাপ্ত-রত্ন হারাঞা ঐছে ব্যগ্র হ-ইলা ।
বিষণ্ণ হঞা প্রভু নিজ-বাসা আইলা ॥৩৫॥

প্রাপ্ত-রত্ন হারাঞা ঐছে ব্যগ্র হ-ইলা ।
বিষণ্ণ হঞা প্রভু নিজ-বাসা আইলা ॥ ৩৫॥

প্রাপ্ত-রত্ন—प्राप्त किया रत्न; **হারাঞা**—खो जाने से; **ঐছে**—जिस तरह; **ব্যগ্র হ-ইলা**—व्याकुल हो उठे; **বিষণ্ণ হঞা**—खिन्न होकर; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **নিজ**—अपने; **বাসা**—घर; **আইলা**—लौट आये।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु उसी तरह अत्यधिक व्याकुल हो उठे, जिस तरह तुरन्त प्राप्त किये रत्न के खो जाने से कोई व्यक्ति व्याकुल हो उठता है। तब वे अत्यधिक खिन्न हो गये और घर लौट आये।

ভূমির উপর বসি' নিজ-নখে ভূমি লিখে ।
অশ্রু-গঙ্গা নেত্রে বহে, কিছুই না দেখে ॥৩৬॥

ভূমির উপর বসি' নিজ-নখে ভূমি লিখে ।
অশ্রু-গঙ্গা নেত্রে বহে, কিছুই না দেখে ॥ ৩৬॥

भूमिर उपर—भूमि पर; **वसि'**—बैठकर; **निज-नखे**—अपने नाखूनों से; **भूमि लिखे**—भूमि कुरेदना; **अश्रु-गङ्गा**—गंगा की तरह अश्रु; **नेत्रे**—आँखों से; **वहे**—बहे; **किछुइ**—कुछ भी; **ना देखे**—नहीं दिख रहा।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु भूमि पर बैठकर अपने नाखूनों से भूमि कुरेदने लगे। आँसुओं से उनके नेत्र अन्धे हो चले—ये आँसू उनके नेत्रों से गंगा नदी के समान प्रवाहित हो रहे थे।

'पाइलुँ वृन्दावन-नाथ, पुनः हाराइलुँ ।
के मोर निलेक कृष्ण? काहाँ मुइ आइनु'? ॥ ३७॥
'पाइलुँ वृन्दावन-नाथ, पुनः हाराइलुँ ।
के मोर निलेक कृष्ण? काहाँ मुइ आइनु'? ॥ ३७॥

पाइलुँ—मैंने पाया; **वृन्दावन-नाथ**—वृन्दावन के स्वामी; **पुनः**—फिर से; **हाराइलुँ**—मैंने खो दिया; **के**—किसने; **मोर**—मेरा; **निलेक**—ले लिया; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **काहाँ**—कहाँ; **मुइ आइनु**—मैं आया हूँ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "मैंने वृन्दावन के स्वामी कृष्ण को पाया तो सही, किन्तु उन्हें फिर से खो दिया। मेरे कृष्ण को किसने ले लिया? मैं कहाँ आ गया हूँ?"

तात्पर्य

ये श्रीमती राधारानी के भाव हैं। सर्वप्रथम श्री चैतन्य महाप्रभु को लगा कि वे वृन्दावन ले जाये गये हैं, जहाँ उन्होंने गोपियों के साथ कृष्ण का रास नृत्य देखा। तब उन्हें भगवान् जगन्नाथ, उनकी बहन सुभद्रा तथा बलराम को देखने के लिए कुरुक्षेत्र ले जाया गया। श्री चैतन्य महाप्रभु ने वृन्दावन तथा वृन्दावन के स्वामी कृष्ण को खो दिया। इस समय चैतन्य महाप्रभु को कृष्ण के विरह में दिव्योन्माद का अनुभव हुआ। कुरुक्षेत्र में कृष्ण अपना ऐश्वर्य प्रदर्शित करते हैं, किन्तु वृन्दावन में वे अपने मूल रूप में रहते हैं। कृष्ण वृन्दावन से एक पग भी दूर नहीं जाते, इसलिए गोपियों के लिए कुरुक्षेत्र वृन्दावन की अपेक्षा कम महत्त्वपूर्ण है।

जो भक्त कृष्ण के ऐश्वर्य रूप (वैकुण्ठ रूप) की पूजा करते हैं, वे भले ही कृष्ण को कुरुक्षेत्र में सुभद्रा तथा बलराम के साथ दर्शन करना पसन्द करें, किन्तु गोपियाँ कृष्ण को वृन्दावन में श्रीमती राधारानी के साथ रासनृत्य करते देखना चाहती हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु ने व्यावहारिक दृष्टान्त द्वारा दिखलाया कि कोई किस तरह कृष्ण के विरह में राधारानी तथा अन्य गोपियों के भाव को अंगीकार कर सकता है। इस भाव में डूबे हुए भक्तगण कृष्ण को वृन्दावन के अतिरिक्त अन्यत्र देखना पसन्द नहीं करते। इसीलिए श्री चैतन्य महाप्रभु शोक करने लगे, "मैंने वृन्दावन में कृष्ण को पाया, किन्तु अब पुनः उन्हें खो दिया है और मैं कुरुक्षेत्र आ गया हूँ।" जब तक कोई अत्यन्त उन्नत भक्त नहीं हो जाता, तब तक वह इन जटिल भावों को नहीं समझ सकता। श्री चैतन्य चरितामृत के प्रणेता ने इस *दिव्योन्माद* की यथासम्भव व्याख्या करने का प्रयास किया है और हमारा कर्तव्य है कि हम सहज भाव से इसकी यथासम्भव प्रशंसा करें। इसलिए प्रणेता ने श्लोक ११ में निम्नलिखित अनुरोध किया है :

ताते विश्वास करि 'शुन भावेर वर्णन।
हइबे भावेर ज्ञान, पाइबा प्रेमधन॥

"प्रिय पाठकों, इस वर्णन को श्रद्धा तथा प्रेम से सुनने का प्रयास करो। इससे तुम्हें दिव्य भाव को समझने में सहायता प्राप्त होगी और अन्त में तुम्हें सरलता से भगवत्प्रेम प्राप्त हो सकेगा।"

स्वप्नावेशे प्रेमे प्रभुर गर गर मन ।
बाह्य हैले हय—येन हाराइल धन ॥ ३८॥

स्वप्नावेशे प्रेमे प्रभुर गर गर मन ।
बाह्य हैले हय—ग्रेन हाराइल धन ॥ ३८॥

स्वप्न-आवेशे—जब स्वप्न में मग्न; **प्रेमे**—कृष्ण के प्रेम में; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **गर गर**—पूर्णतया मग्न; **मन**—मन; **बाह्य हैले**—जब वे जागे; **हय**—हुआ; **ग्रेन**—जैसे; **हाराइल**—उन्होंने खो दिया; **धन**—एक अमूल्य रत्न।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने रास नृत्य का स्वप्न देखा, तब वे दिव्य

आनन्द में पूर्णतया मग्न थे, किन्तु जब उनका स्वप्न टूटा, तो उन्हें लगा कि उनका एक अमूल्य रत्न खो गया है।

উন্মত্তের প্রায় প্রভু করেন গান-নৃত্য ।
দেহের স্বভাবে করেন স্নান-ভোজন-কৃত্য ॥৩৯॥

উন্মত্তের প্রায় প্রভু করেন গান-নৃত্য ।
দেহের স্বভাবে করেন স্নান-ভোজন-কৃত্য ॥ ৩৯ ॥

उन्मत्तेर प्राय—पागल की तरह; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करेन**—करते; **गान-नृत्य**—कीर्तन और नृत्य; **देहेर**—शरीर का; **स्वभावे**—स्वभाववश; **करेन**—पूरा कर लेते; **स्नान**—स्नान करना; **भोजन**—खाना; **कृत्य**—कार्य।

अनुवाद

इस तरह दिव्य उन्माद के आनन्द में सदैव मग्न श्री चैतन्य महाप्रभु कीर्तन और नृत्य करते। वे खाने तथा स्नान करने जैसी शारीरिक आवश्यकताओं को स्वभाववश पूरा कर लेते।

রাত্রি হৈলে স্বরূপ-রামানন্দে লঞা ।
আপন মনের ভাব কহে উঘাড়িয়া ॥৪০॥

রাত্রি হৈলে স্বরূপ-রামানন্দে লঞা ।
আপন মনের ভাব কহে উঘাড়িয়া ॥ ৪০ ॥

रात्रि हैले—रात्रि के समय; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **रामानन्दे**—रामानन्द राय; **लञा**—साथ लाकर; **आपन मनेर**—अपने मन के; **भाव**—भाव; **कहे**—कहते; **उघाड़िया**—व्यक्त करके।

अनुवाद

रात्रि के समय श्री चैतन्य महाप्रभु अपने मन के भावों को स्वरूप दामोदर तथा रामानन्द राय के सामने व्यक्त करते थे।

প্রাপ্ত-প্রণষ্টাচ্যুত-বিত্ত আত্মা
যয়ৌ বিষাদোজ্ঝিত-দেহ-গেহঃ ।

गृहीत-कापालिक-धर्मको मे
वृन्दावनं सेन्द्रिय-शिष्य-वृन्दः ॥ ४१ ॥

प्राप्त-प्रणष्टाच्युत-वित्त आत्मा
ययौ विषादोज्झित-देह-गेहः ।
गृहीत-कापालिक-धर्मको मे
वृन्दावनं सेन्द्रिय-शिष्य-वृन्दः ॥ ४१ ॥

प्राप्त—प्राप्त किया; **प्रणष्ट**—खोया; **अच्युत**—कृष्ण; **वित्तः**—कृष्ण रूपी रत्न; **आत्मा**—मन; **ययौ**—गया; **विषाद**—शोक; **उज्झित**—दे दिया; **देह-गेहः**—शरीर और घर; **गृहीत**—स्वीकार किया; **कापालिक-धर्मकः**—कापालिक योगी के धर्म को; **मे**—मेरा; **वृन्दावनम्**—वृन्दावन में; **स**—के साथ; **इन्द्रिय**—इन्द्रियाँ; **शिष्य-वृन्दः**—शिष्यों।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "पहले मेरे मन ने कृष्ण रूपी रत्न को जैसे-कैसे प्राप्त किया, किन्तु पुनः उसे खो दिया। इसलिए उसने शोक के कारण मेरे शरीर और घर को छोड़कर कापालिक योगी के धर्म को स्वीकार कर लिया है। तब मेरा मन मेरी इन्द्रियाँ रूपी अपने शिष्यों के साथ वृन्दावन चला गया।"

तात्पर्य

यह श्लोक स्पष्ट रूप से एक रूपक है।

প্রাপ্ত-রত্ন হারাঞা, তার গুণ সঙরিয়া,
মহাপ্রভু সন্তাপে বিহ্বল ।
রায়-স্বরূপের কণ্ঠ ধরি', কহে 'হাহা হরি হরি',
ধৈর্য গেল, হ-ইলা চপল ॥ ৪২ ॥

প্রাপ্ত-রত্ন হারাঞা, তার গুণ সঙরিয়া,
মহাপ্রভু সন্তাপে বিহ্বল ।
রায়-স্বরূপের কণ্ঠ ধরি', কহে 'হাহা হরি হরি',
ধৈর্য্য গেল, হ-ইলা চপল ॥ ৪২ ॥

প্রাপ্ত—प्राप्त किया हुआ; **रत्न**—रत्न; **हाराञा**—को खोकर; **तार**—उसके; **गुण**—गुण; **सङरिया**—स्मरण करके; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सन्तापे**—शोक से; **विह्वल**—विह्वल;

राय—रामानन्द राय के; **स्वरूपेर**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी के; **कण्ठ धरि'**—गले लगकर; **कहे**—कहा; **हाहा हरि हरि**—हरि कहाँ हैं ? हरि कहाँ हैं ?; **धैर्य्य**—धैर्य; **गेल**—गया; **ह-इला चपल**—चंचल हो उठे।

अनुवाद

अपने प्राप्त किये हुए रत्न को खोकर श्री चैतन्य महाप्रभु उसके गुणों का स्मरण करके शोक से विह्वल हो गये। तब रामानन्द राय तथा स्वरूप दामोदर गोस्वामी के गले लगकर वे रो पड़े, "हाय! मेरे हरि कहाँ हैं ? हरि कहाँ हैं ?" अन्त में वे चंचल हो उठे और उनका सारा धैर्य जाता रहा।

"शुन, बान्धव, कृष्णेर माधुरी
यार लोभे मोर मन, छाड़ि' लोक-वेद-धर्म, ।
योगी हञा ह-इल भिखारी ॥४३॥

"शुन, बान्धव, कृष्णेर माधुरी
यार लोभे मोर मन, छाड़ि' लोक-वेद-धर्म, ।
योगी हञा ह-इल भिखारी ॥४३॥

शुन—कृपया सुनो; **बान्धव**—हे बन्धुओं; **कृष्णेर माधुरी**—भगवान् कृष्ण की मधुरता; **यार**—जिसके लिए; **लोभे**—लोभ से; **मोर मन**—मेरा मन; **छाड़ि'**—दे दिया; **लोक-वेद-धर्म**—सामाजिक तथा वैदिक धर्म के; **योगी हञा**—योगी बनने के लिए; **ह-इल भिखारी**—भिखारी बन गया।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "हे बन्धुओं, कृपया कृष्ण की मधुरता के विषय में सुनो। उस मधुरता के लिए महती इच्छा के कारण मेरे मन ने सारे सामाजिक तथा वैदिक धर्म के सिद्धान्तों को त्याग दिया है और उसने योगी की तरह भिखारी की वृत्ति अपना ली है।

कृष्ण-लीला-मण्डल, शुद्ध शङ्ख-कुण्डल,
गड़िया़छे शुक कारिकर ।
सेइ कुण्डल काणे परि', तृष्णा-लाउ-थाली धरि',
आशा-झुलि काङ्धेर उपर ॥४४॥

कृष्ण-लीला-मण्डल, शुद्ध शङ्ख-कुण्डल,
गड़ियाछे शुक कारिकर ।
सेइ कुण्डल काणे परि', तृष्णा-लाउ-थाली धरि',
आशा-झुलि कान्धेर उपर ॥ ४४॥

कृष्ण-लीला-मण्डल—कृष्ण की रासलीला का वृत्त; **शुद्ध**—शुद्ध; **शङ्ख-कुण्डल**—शंख का कुण्डल; **गड़ियाछे**—बनाया; **शुक**—शुकदेव गोस्वामी; **कारिकर**—कारीगर; **सेइ कुण्डल**—वह कुण्डल; **काणे परि'**—कान में धारण कर; **तृष्णा**—तृष्णा; **लाउ**—लौकी; **थाली**—कटोरा (कमण्डल); **धरि'**—लेकर; **आशा**—आशाओं का; **झुलि**—झोला; **कान्धेर उपर**—कन्धे पर।

अनुवाद

"अत्यन्त शुभ कारीगर शुकदेव गोस्वामी द्वारा निर्मित कृष्ण की रासलीला का वृत्त, शंख से बने एक कुण्डल की ही तरह शुद्ध है। मेरे मन रूपी योगी ने उस कुण्डल को अपने कान में धारण कर रखा है। उसने एक लौकी से मेरी तृष्णाओं का कमण्डल बना लिया है और मेरी आशाओं का झोला अपने कन्धे पर टाँग लिया है।

चिन्ता-कान्था उड़ि गाय, धूलि-विभूति-मलिन-काय,
'हाहा कृष्ण' प्रलाप-उत्तर ।
उद्वेग द्वादश हाते, लोभेर झुलनि माथे,
भिक्षाभावे क्षीण कलेवर ॥ ४५॥

चिन्ता-कान्था उढ़ि गाय, धूलि-विभूति-मलिन-काय,
'हाहा कृष्ण' प्रलाप-उत्तर ।
उद्वेग द्वादश हाते, लोभेर झुलनि माथे,
भिक्षाभावे क्षीण कलेवर ॥ ४५॥

चिन्ता—चिन्ता; **कान्था**—फटी गुदड़ी; **उढ़ि**—धारण करना; **गाय**—शरीर पर; **धूलि**—धूल; **विभूति**—विभूति; **मलिन-काय**—गन्दे शरीर में; **हाहा**—हाय!; **कृष्ण**—कृष्ण; **प्रलाप-उत्तर**—पागल उत्तर; **उद्वेग**—दुःख की; **द्वादश**—बारह (बंगडी); **हाते**—कलाई पर; **लोभेर**—लोभ की; **झुलनि**—पगड़ी; **माथे**—सिर पर; **भिक्षा-अभावे**—भिक्षा के अभाव में (कुछ न खाने से); **क्षीण**—दुर्बल; **कलेवर**—शरीर।

अनुवाद

"मेरा मन रूपी योगी चिन्ता की फटी गुदड़ी धूल तथा राख से सने अपने गन्दे शरीर में धारण करता है। उसके एकमात्र शब्द हैं, 'हाय! कृष्ण!' वह अपनी कलाई में दुःख की बारह चूड़ियाँ धारण करता है और अपने सिर पर लोभ की पगड़ी बाँधता है। कुछ न खाने के कारण वह अत्यन्त क्षीण है।

ব্যাস, শুকাদি যোগি-গণ, কৃষ্ণ আত্মা নিরঞ্জন,
ব্রজে তাঁর যত লীলা-গণ ।
ভাগবতাদি শাস্ত্র-গণে, করিয়াছে বর্ণনে,
সেই তর্জা পড়ে অনুক্ষণ ॥ ৪৬॥

ব্যাস, শুকাদি য়োগি-গণ, কৃষ্ণ আত্মা নিরঞ্জন,
ব্রজে তাঁর য়ত লীলা-গণ ।
ভাগবতাদি শাস্ত্র-গণে, করিয়াছে বর্ণনে,
সেই তর্জা পড়ে অনুক্ষণ ॥ ৪৬॥

ব্যাস—द्वैपायन व्यास; **शुक-आदि**—तथा शुकदेव गोस्वामी जैसे महान् सन्त; **य़ोगि-गण**—योगीजन; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **आत्मा**—परमात्मा; **निरञ्जन**—भौतिक कल्मष के बिना; **व्रजे**—वृन्दावन में; **ताँर**—उनकी; **य़त**—सभी; **लीला-गण**—लीलाओं; **भागवत-आदि**—*श्रीमद्भागवत* तथा अन्य; **शास्त्र-गणे**—शास्त्रों में; **करियाछे वर्णने**—वर्णन किया है; **सेइ तर्जा**—दो पक्षों में कविता तथा व्याख्यानों की स्पर्धा; **पड़े**—पढ़ने की; **अनुक्षण**—हर क्षण।

अनुवाद

"मेरा मन रूपी योगी सदैव कृष्ण की वृन्दावन लीलाओं की कविता तथा व्याख्याओं को पढ़ता है। श्रीमद्भागवत तथा अन्य शास्त्रों में व्यासदेव तथा शुकदेव गोस्वामी जैसे महान् सन्त योगीजनों ने भगवान् कृष्ण का वर्णन परमात्मा के रूप में किया है, जो सारे भौतिक कल्मष से परे हैं।

দশেন্দ্রিয়ে শিষ্য করি', 'মহা-বাউল' নাম ধরি',
শিষ্য লঞা করিল গমন ।

মোর দেহ স্ব-সদন, বিষয়-ভোগ মহা-ধন,
সব ছাড়ি' গেলা বৃন্দাবন ॥ ৪৭॥

দশেন্দ্রিয়ে শিষ্য করি', 'মহা-বাউল' নাম ধরি',
শিষ্য লঞা করিল গমন ।
মোর দেহ স্ব-সদন, বিষয়-ভোগ মহা-ধন,
সব ছাড়ি' গেলা বৃন্দাবন ॥ ৪৭॥

দশ-ইন্দ্রিয়ে—দস इन्द्रियों का; **শিষ্য করি'**—शिष्य बनाकर; **মহা-বাউল**—महान् भिक्षुक का; **নাম ধরি'**—नाम धारण किया; **শিষ্য লঞা**—शिष्य लिया; **করিল গমন**—गया; **মোর**—मेरा; **দেহ**—शरीर; **স্ব-সদন**—अपना घर; **বিষয়-ভোগ**—भौतिक भोग; **মহা-ধন**—महान् कोष; **সব ছাড়ি'**—सब छोड़कर; **গেলা বৃন্দাবন**—वृन्दावन गया।

अनुवाद

"मेरे मन रूपी योगी ने महा-बाउल नाम ग्रहण किया है और मेरी दस इन्द्रियों को अपना शिष्य बना लिया है। इस तरह मेरा मन मेरे शरीर रूपी घर को तथा भौतिक भोग के महान् कोष को छोड़कर वृन्दावन चला गया है।

तात्पर्य

यहाँ पर श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने मन की उपमा बाउल नामक योगियों से दी है, जो कम से कम दस शिष्य बनाते हैं।

বৃন্দাবনে প্রজা-গণ, যত স্থাবর-জঙ্গম,
বৃক্ষ-লতা গৃহস্থ-আশ্রমে ।
তার ঘরে ভিক্ষাটন, ফল-মূল-পত্রাশন,
এই বৃত্তি করে শিষ্য-সনে ॥ ৪৮॥

বৃন্দাবনে প্রজা-গণ, যত স্থাবর-জঙ্গম,
বৃক্ষ-লতা গৃহস্থ-আশ্রমে ।
তার ঘরে ভিক্ষাটন, ফল-মূল-পত্রাশন,
এই বৃত্তি করে শিষ্য-সনে ॥ ৪৮॥

বৃন্দাবনে—वृन्दावन में; **প্রজা-গণ**—नागरिकों; **যত**—सब; **স্থাবর-জঙ্গম**—चर तथा अचर; **বৃক্ষ-লতা**—वृक्ष तथा लताओं; **গৃহস্থ-আশ্রমে**—गृहस्थाश्रम में; **তার ঘরে**—उनके

घर पर; **भिक्षा-अटन**—द्वार-द्वार भिक्षा माँगकर; **फल-मूल-पत्र**—फल, मूल तथा पत्तों को; **अशन**—खाकर; **एइ वृत्ति**—यह कार्य; **करे**—करता; **शिष्य-सने**—शिष्यों के साथ।

अनुवाद

"वह वृन्दावन में अपने शिष्यों के साथ द्वार-द्वार भीख माँगता है। वह चर तथा अचर दोनों ही तरह के निवासियों से—नागरिकों, वृक्षों तथा लताओं से भीख माँगता है। इस तरह वह फल, मूल तथा पत्तों पर जीवन-निर्वाह करता है।

কৃষ্ণ-গুণ-রূপ-রস, গন্ধ, শব্দ, পরশ,
সে সুধা আস্বাদে গোপী-গণ ।
তা-সবার গ্রাস-শেষে, আনি' পঞ্চেন্দ্রিয় শিষ্যে,
সে ভিক্ষায় রাখেন জীবন ॥ ৪৯॥

কৃষ্ণ-গুণ-রূপ-রস, গন্ধ, শব্দ, পরশ,
সে সুধা আস্বাদে গোপী-গণ ।
তা-সবার গ্রাস-শেষে, আনি' পঞ্চেন্দ্রিয় শিষ্যে,
সে ভিক্ষায় রাখেন জীবন ॥ ৪৯॥

কৃষ্ণ—भगवान् कृष्ण के; **गुण-रूप-रस**—गुण, सौन्दर्य और मधुरता; **गन्ध शब्द परश**—उनकी सुगन्ध, ध्वनि और स्पर्श; **से सुधा**—वह अमृत का; **आस्वादे**—आस्वादन; **गोपी-गण**—सभी गोपियाँ; **ता-सबार**—उन सभी को; **ग्रास-शेषे**—बचा हुआ भोजन; **आनि'**—लाकर; **पञ्च-इन्द्रिय**—पाँच इन्द्रियाँ; **शिष्ये**—शिष्य; **से भिक्षाय**—भीक्षा के लिए; **राखेन**—धारण करते हैं; **जीवन**—जीवन।

अनुवाद

"व्रजभूमि की गोपियाँ सदा कृष्ण के गुणों, उनके सौन्दर्य, उनकी मधुरता, उनकी सुगन्ध, उनकी वंशी की ध्वनि तथा उनके शरीर-स्पर्श के अमृत का आस्वादन करती हैं। मेरे मन के पाँच शिष्य, मेरी ज्ञानेन्द्रियाँ उस अमृत के शेष को गोपियों से एकत्र करके मेरे मन रूपी योगी के पास लाती हैं। इन्द्रियाँ उसी शेष को खाकर अपना जीवन धारण करती हैं।

শূন্য-কুঞ্জ-মণ্ডপ-কোণে, যোগাভ্যাস কৃষ্ণ-ধ্যানে,
তাহাঁ রহে লঞা শিষ্য-গণ ।

কৃষ্ণ আত্মা নিরঞ্জন, সাক্ষাদ্দেখিতে মন,
ধ্যানে রাত্রি করে জাগরণ ॥৫০॥

শূন্য-কুঞ্জ-মণ্ডপ-কোণে, য়োগাভ্যাস কৃষ্ণ-ধ্যানে,
তাহাঁ রহে লঞা শিষ্য-গণ ।
কৃষ্ণ আত্মা নিরঞ্জন, সাক্ষাত্ দেখিতে মন,
ধ্যানে রাত্রি করে জাগরণ ॥৫০॥

শূন্য-কুঞ্জ-মণ্ডপ-কোণে—एक एकान्त उद्यान के एक कोने में; **য়োগ-অভ্যাস**—योगाभ्यास; **কৃষ্ণ-ধ্যানে**—कृष्ण के ध्यान द्वारा; **তাহাঁ**—वहाँ; **রহে**—रहता है; **লঞা**—लेकर; **শিষ্য-গণ**—शिष्यगण; **কৃষ্ণ**—भगवान् कृष्ण; **আত্মা**—परमात्मा; **নিরঞ্জন**—भौतिक कल्मष के बिना; **সাক্ষাত্**—प्रत्यक्ष; **দেখিতে**—दर्शन; **মন**—मन; **ধ্যানে**—ध्यान में; **রাত্রি**—रात को; **করে জাগরণ**—जागरण करता है।

अनुवाद

"एक एकान्त उद्यान में कृष्ण अपनी लीलाओं का आनन्द लेते हैं और उस उद्यान के मण्डप के एक कोने में मेरा मन रूपी योगी अपने शिष्यों सहित योगाभ्यास करता है। वह योगी कृष्ण का प्रत्यक्ष दर्शन करने के लिए रातभर जागता रहता है और कृष्ण का ध्यान करता है, जो कि परमात्मा हैं और प्रकृति के तीन गुणों से अकलुषित रहते हैं।

মন কৃষ্ণ-বিয়োগী, দুঃখে মন হৈল যোগী,
সে বিয়োগে দশ দশা হয় ।
সে দশায় ব্যাকুল হঞা, মন গেল পলাঞা,
শূন্য মোর শরীর আলয়'' ॥৫১॥

মন কৃষ্ণ-বিয়োগী, দুঃখে মন হৈল য়োগী,
সে বিয়োগে দশ দশা হয় ।
সে দশায় ব্যাকুল হঞা, মন গেল পলাঞা,
শূন্য মোর শরীর আলয়" ॥৫১॥

মন—मन; **কৃষ্ণ-বিয়োগী**—कृष्ण संग के वियोग के; **দুঃখে**—दुःख में; **মন**—मन; **হৈল**—बना; **য়োগী**—योगी; **সে বিয়োগে**—वियोग के भाव में; **দশ**—दस; **দশা**—दिव्य विकार; **হয়**—है; **সে দশায়**—इन दिव्य विकारों से; **ব্যাকুল হঞা**—चलायमान होकर; **মন**—मन;

गेल—चला गया; **पलाञा**—भागकर; **शून्य**—शून्य; **मोर**—मेरा; **शरीर**—शरीर; **आलय**—निवासस्थान।

अनुवाद

"जब मेरे मन ने कृष्ण-संग खो दिया और वह उन्हें नहीं देख पाया, तो वह अत्यधिक दुःखी हो गया और उसने योग धारण कर लिया। कृष्ण के वियोग की शून्यता में उसे दस दिव्य विकारों का अनुभव हुआ। इन विकारों से चलायमान होकर मेरा मन अपने निवासस्थान मेरे शरीर को छोड़कर भाग गया है। इस प्रकार मैं पूर्णतया समाधि में हूँ।"

तात्पर्य

इस श्लोक में कापालिक साधुओं के बाह्य कार्यकलापों का वर्णन हुआ है, न कि उनके वास्तविक जीवन का। कापालिक साधु तान्त्रिक भौतिकतावादी होते हैं, जो अपने हाथों में खोपड़ियाँ लिये रहते हैं। वे वैष्णव नहीं होते और आध्यात्मिक जीवन से उन्हें कुछ लेना-देना नहीं होता। इसलिए वे लोग अस्पृश्य हैं। मन तथा कापालिकों के कार्यकलापों की मात्र बाह्य तुलना की गई है, किन्तु उनके व्यवहार का अनुकरण कभी नहीं करना चाहिए।

কৃষ্ণের বিয়োগে গোপীর দশ দশা হয় ।
সেই দশ দশা হয় প্রভুর উদয় ॥৫২॥

কৃষ্ণের বিয়োগে গোপীর দশ দশা হয় ।
সেই দশ দশা হয় প্রভুর উদয় ॥৫২॥

कृष्णेर वियोगे—कृष्ण के वियोग से; **गोपीर**—गोपियों का; **दश दशा**—शरीर के दस प्रकार के दिव्य विकार; **हय**—हैं; **सेइ**—ये; **दश दशा**—शरीर के दस प्रकार के दिव्य विकार; **हय**—हैं; **प्रभुर उदय**—श्री चैतन्य महाप्रभु के शरीर में प्रकट।

अनुवाद

जब गोपियों को कृष्ण के वियोग का अनुभव हुआ, तब उन्होंने दस प्रकार के शारीरिक विकारों का अनुभव किया। वे ही लक्षण श्री चैतन्य महाप्रभु के शरीर में प्रकट हो गये।

चिन्तात्र जागरोद्वेगौ तानवं मलिनाङ्गता ।
प्रलापो व्याधिरुन्मादो मोहो मृत्युर्दशा दश ॥५३॥

चिन्तात्र जागरोद्वेगौ तानवं मलिनाङ्गता ।
प्रलापो व्याधिरुन्मादो मोहो मृत्युर्दशा दश ॥५३॥

चिन्ता—चिन्ता; **अत्र**—यहाँ (कृष्ण से वियोग के कारण); **जागर**—जागरण; **उद्वेगौ**—उद्वेग; **तानवम्**—पतलापन; **मलिन-अङ्गता**—मलिनता; **प्रलापः**—प्रलाप; **व्याधिः**—व्याधि; **उन्मादः**—उन्माद; **मोहः**—मोह; **मृत्युः**—मृत्यु; **दशाः**—दशा; **दश**—दस।

अनुवाद

"कृष्ण वियोग से उत्पन्न दस शारीरिक विकार हैं—चिन्ता, जागरण, उद्वेग, कृशता, मलिनता, प्रलाप, व्याधि, उन्माद, मोह तथा मृत्यु।"

तात्पर्य

यह श्लोक श्रील रूप गोस्वामी कृत *उज्ज्वल नीलमणि* (विप्रलंभ-प्रकरण १५३) से है, जिसमें श्रीमती राधारानी की दस दशाओं का आंशिक वर्णन हुआ है। इस पुस्तक में उन्होंने दस लक्षणों की विवेचना विस्तार से इस प्रकार की है।

हंसदूत (२) में *चिन्ता* का वर्णन इस प्रकार मिलता है :

यदा यातो गोपीहृदयमदनो नन्दसदनान्
मुकुन्दो गान्दिन्यास्तनयम् अनुरुन्धन् मधुपुरीम्।
तदामांक्षीच्चिन्तासरिति घनघूर्णापरिचयै-
रगाधायां बाधामयपयसि राधा विरहिणी॥

"अक्रूर के आग्रह पर कृष्ण तथा बलराम ने मथुरा के लिए नन्द महाराज के घर से प्रस्थान किया। उस समय श्रीमती राधारानी का मन टूट गया और वे कृष्ण के तीव्र वियोग के कारण विक्षिप्तप्राय हो गईं। उन्हें अत्यन्त मानसिक पीड़ा तथा क्षोभ हो रहा था, जिससे वे चिन्ता रूपी नदी में मनोरथों में डूब गईं। उन्होंने सोचा, 'अब तो मैं मरने जा रही हूँ और जब मैं मरूँगी, तो कृष्ण अवश्य ही मुझे देखने फिर से लौटेंगे। किन्तु जब वे वृन्दावनवासियों से मेरी मृत्यु के विषय में जब सुनेंगे, तो वे निश्चित रूप से दुःखी होंगे। इसलिए मैं मरूँगी नहीं।" *चिन्ता* शब्द की यह व्याख्या है।

जागर—जागरण, जैसाकि पद्यावली (३२६) में कहा गया है :

याः पश्यन्ति प्रियं स्वप्ने धन्यास्ताः सखि योषितः।
अस्माकं तु गते कृष्णे गता निद्रापि वैरिणी॥

अपने आपको अत्यन्त अभागिनी सोचते हुए श्रीमती राधारानी अपनी प्रिय सखी विशाखा से कहती हैं, "हे प्रिय सखी, यदि मैं कृष्ण को अपने स्वप्न में देख सकूँ, तो निश्चय ही मैं अपने परम भाग्य को धन्य मानूँगी। किन्तु मैं कर ही क्या सकती हूँ? नींद भी मेरे साथ चपलता प्रदर्शित करती है। वह मेरी वैरिणी बन गई है। इसलिए जब से कृष्ण गये हैं, मैं सो नहीं पाई।"

उद्वेग—*हंसदूत* (१०४) में इस शब्द की व्याख्या इस प्रकार हुई है :

मनो मे हा कष्टं ज्वलति किमहं हन्त करवै
न पारं नावारं सुमुखि कलयाम्यस्य जलधेः।
इयं वन्दे मूर्ध्ना सपदि तमुपायं कथय मे
परामृश्ये यस्माद् धृति कणिकयापि क्षणिकया॥

श्रीमती राधारानी ने ललिता को सम्बोधित किया, "हे सुन्दर मुख वाली ललिता, मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि मेरा हृदय किस तरह जल रहा है। यह चिन्ता का अगाध विशाल सागर है। फिर भी मैं तुम्हारे चरणकमलों में नमस्कार करना चाहती हूँ। मैं क्या करूँ? मेरी अवस्था पर विचार करके मुझे परामर्श दो कि मैं कैसे शान्त बनूँ। यही मेरी इच्छा है।"

तानव—कृशता, का वर्णन इस प्रकार हुआ है :

उदञ्चद्वक्त्राम्भोरुहविकृतिरन्तः कुलषिता
सदाहाराभावग्लपितकुचकोका यदुपते।
विशुष्यन्ति राधा तव विरहतापादनुदिनं
निदाघे कुल्येव क्रशिमपरिपाकं प्रथयति॥

जब उद्धव वृन्दावन से मथुरा लौट आये, तब भगवान् कृष्ण ने उनसे राधारानी तथा विशाखा के बारे में पूछा। तब उद्धव ने इस प्रकार उत्तर दिया, "जरा गोपियों की दशा के विषय में विचार तो कीजिये! श्रीमती राधारानी विशेष रूप से आपके वियोग के कारण अत्यन्त वेदनापूर्ण दशा में हैं। वे अत्यन्त क्षीण हो गई हैं, और उनके शरीर की कान्ति लगभग चली गई है।

उनका हृदय वेदना में डूब गया है और चूँकि उन्होंने भोजन करना छोड़ दिया है, इसलिए उनके स्तन श्याम पड़ गये हैं, मानो रुग्ण हों। आपके वियोग के कारण सारी गोपियाँ, विशेषतया राधारानी सूर्य की झुलसती धूप में सूखे हुए जल के छिद्रों जैसी हो गई हैं।"

मलिन-अंगता का वर्णन इस प्रकार हुआ है :

हिमविसर विशीर्णाम्भोजतुल्याननश्रीः
खरमरुदपरज्यद्बन्धुजीवोपमौष्ठी ।
अघहर शरदर्कोत्तापितेन्दीवराक्षी
तव विरहविपत्तिम्लापितासीद् विशाखा॥

उद्धव ने कृष्ण से कहा, "हे परम शुभ कृष्ण, कृपया मेरी बात सुनें। आपकी अनुपस्थिति से उत्पन्न विपत्ति ने विशाखा को म्लान बना दिया है। उनके होंठ प्रबल वायु द्वारा झकोरे गये वृक्ष की तरह काँपते हैं, उनका कमल के फूल जैसा सुन्दर मुख हिम के कारण मुरझा गया है और उनकी आँखें कमल की पंखुड़ी जैसी हैं, जो शरद ऋतु के सूर्य से झुलस गई हैं।"

प्रलाप की व्याख्या *ललित माधव* में इस प्रकार हुई है :

क्व नन्दकुलचन्द्रमाः क्व शिखिचन्द्रकालंकृतिः
क्व मन्द्रमुरलीरवः क्व नु सुरेन्द्रनीलद्युतिः ।
क्व रासरसताण्डवी क्व सखि जीव रक्षौषधि-
र्निधिर्मम सुहृत्तमः क्व तव हन्त हाधिग्विधिः॥

यह श्रीमती राधारानी का विलाप अपने प्रेमी कृष्ण के लिए है, जो घर से दूर थे। जिस स्त्री का पति घर छोड़कर विदेश चला गया है, वह *प्रोषितभर्तृका* कहलाती है। जिस तरह से सामान्य स्त्री अपने पति के लिए विलाप करती है, उसी तरह कृष्ण के लिए श्रीमती राधारानी शोक करती हुई कहती हैं, "हे प्रिय सखी, कहाँ हैं नन्द महाराज के परिवार की वह शोभा, जो अपने सिर पर अर्धचन्द्र आभूषण धारण करते हैं? कहाँ हैं कृष्ण, जिनका रंग इन्द्रनीलमणि के समान है और जो अत्यन्त उत्तम रीति से अपनी वंशी बजाते हैं? कहाँ हैं पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ तुम्हारा मित्र, जो वृत्तों में रास नृत्य करने में इतने पटु हैं? कहाँ हैं वह, जो हृदय रोग से मर रही मुझ को बचाने की वास्तविक औषधि

हैं ? मुझे विधाता को कोसना चाहिए, क्योंकि उसने मुझे कृष्ण से विलग करके इतनी पीड़ा पहुँचाई है।"

व्याधि का भी वर्णन *ललित माधव* में मिलता है :

उत्तापी पुटपाकतोऽपि गरलग्रामादपि क्षोभणो
दम्भोलेरपि दुःसहः कटुरलं हन्मग्नशूल्यादपि।
तीव्रः प्रौढविशूचिकानिचयतोऽप्युच्चैर्ममायं बली
मर्माण्यद्य भिनत्ति गोकुलपतेर्विश्लेषजन्मा ज्वरः॥

कृष्ण के विछोह की पीड़ा से अत्यधिक दुःखी होकर श्रीमती राधारानी ने कहा "हे ललिता, कृपया मेरी बात सुनो। मैं कृष्ण के विरह के ज्वर को सह नहीं पा रही, न ही तुमसे इसका वर्णन कर सकती हूँ। यह मिट्टी के पात्र में सोने के पिघलने जैसा है। यह ज्वर विष से भी अधिक कष्ट दे रहा है और वज्र से भी अधिक बेधने वाला है। मैं उसी तरह कष्ट पा रही हूँ, जैसे कि हैजे के कारण अधमरा व्यक्ति। मुझे इतनी पीड़ा देने के लिए यह ज्वर अवश्य ही अत्यन्त प्रबल होगा।"

उन्माद की विवेचना इस प्रकार की गई है :

भ्रमति भवनगर्भे निर्निमित्तं हसन्ती
प्रथयति तव वार्तां चेतनाचेतनेषु।
लुठति च भुवि राधा कम्पितांगी मुरारे
विषमविरहखेदोद्गारिविभ्रान्त चित्ता॥

उद्धव ने कृष्ण से कहा, "हे कृष्ण, आपकी अनुपस्थिति से सारी गोपियाँ इतनी दुःखी हैं कि वे उन्मत्त प्राय हैं। हे मुरारी, श्रीमती राधारानी घर पर व्यर्थ ही हँसती हैं तथा पागल स्त्री की तरह बिना भेदभाव के हर जीव से, यहाँ तक कि पत्थरों तक से आपके विषय में पूछती हैं। वे आपकी अनुपस्थिति की पीड़ा न सह पाने के कारण भूमि पर लोटती हैं।"

मोह की व्याख्या इस प्रकार हुई है :

निरुन्धे दैन्याब्धिं हरति गुरुचिन्ता परिभवं
विलुम्पत्युन्मादं स्थगयति बलाद् बाष्पलहरीम्।

इदानीं कंसारे कुवलयदृशः केवलमिदं
विधत्ते साचिव्यं तव विरहमूर्छासहचरी॥

ललिता ने श्रीमती राधारानी की ओर से कृष्ण को यह पत्र लिखा, "हे प्रिय कृष्ण, आपके विरह ने श्रीमती राधारानी के मन को अत्यधिक चंचल बना दिया है और वह अचेत होकर भूमि पर गिर पड़ी है। हे कंस के शत्रु, अब तो आप उच्चकोटि के राजनीतिज्ञ बन गये हैं; इसलिए आप कदाचित् हर एक को आश्वासन दे सकते हैं। इसलिए कृपया श्रीमती राधारानी की दयनीय दशा पर विचार करें या फिर आप शीघ्र ही उसकी मृत्यु के विषय में सुनेंगे। हो सकता है कि तब आप शोक करोगे, यद्यपि इस समय आप प्रफुल्लित हो।"

हंसदूत (९६) में *मृत्यु* की विवेचना इस प्रकार हुई है :

अये रासक्रीडारसिक मम सख्यं नवनवा
पुरा बद्धा येन प्रणयलहरी हन्त गहना।
स चेन्मुक्तापेक्षस्त्वमसि धिग् इमां तूलशकलं
यदेतस्या नासानिहितमिदमद्यापि चलति॥

इस पत्र में ललिता कृष्ण को मथुरा में रह जाने के लिए धिक्कार करती है, "रास नृत्य के मंडल में नाचने मात्र से तुमने श्रीमती राधारानी के प्रेम को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। अब तुम मेरी सखी राधारानी से इतने उदासीन क्यों हो? तुम्हारी लीलाओं को सोच-सोचकर वह प्रायः मूर्छित पड़ी है। उसके नथुनों के पास रुई का फाहा रखकर पता लगाऊँगी कि वह जीवित है कि नहीं। और यदि वह अब भी जीवित है, तो मैं उसकी भर्त्सना करूँगी।"

एइ दश-दशाय प्रभु व्याकुल रात्रि-दिने ।
कभु कोन दशा उठे, स्थिर नहे मने ॥५४॥

एइ दश-दशाय प्रभु व्याकुल रात्रि-दिने ।
कभु कोन दशा उठे, स्थिर नहे मने ॥५४॥

एइ—इन; **दश-दशाय**—दस दशाओं से; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **व्याकुल**—व्याकुल; **रात्रि-दिने**—रात और दिन; **कभु**—कभी; **कोन**—कुछ; **दशा**—दशा; **उठे**—उठता; **स्थिर**—स्थिर; **नहे**—नहीं; **मने**—मन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु इन दस दशाओं से रात-दिन व्याकुल रहते थे। जब भी ऐसे लक्षण उत्पन्न होते, उनका मन अस्थिर हो उठता।

এত কহি' মহাপ্রভু মৌন করিলা ।
রামানন্দ-রায় শ্লোক পড়িতে লাগিলা ॥৫৫॥

এত কহি' মহাপ্রভু মৌন করিলা ।
রামানন্দ-রায় শ্লোক পড়িতে লাগিলা ॥৫৫॥

এত কহি'—इस तरह कहकर; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **মৌন করিলা**—मौन हो गये; **রামানন্দ-রায়**—रामानन्द राय; **শ্লোক**—श्लोक; **পড়িতে লাগিলা**—सुनाने लगे।

अनुवाद

इस तरह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु मौन हो गये। तब रामानन्द राय विविध श्लोक सुनाने लगे।

স্বরূপ-গোসাঞি করে কৃষ্ণ-লীলা গান ।
দুই জনে কিছু কৈলা প্রভুর বাহ্য জ্ঞান ॥৫৬॥

স্বরূপ-গোসাঞি করে কৃষ্ণ-লীলা গান ।
দুই জনে কিছু কৈলা প্রভুর বাহ্য জ্ঞান ॥৫৬॥

স্বরূপ-গোসাঞি—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **করে**—किया; **কৃষ্ণ-লীলা**—कृष्ण लीलाओं का; **গান**—गायन; **দুই জনে**—दोनों ने; **কিছু**—कुछ; **কৈলা**—किया; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **বাহ্য জ্ঞান**—बाह्य चेतना।

अनुवाद

रामानन्द राय ने 'श्रीमद्भागवत' से कई श्लोक सुनाये और स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने कृष्ण लीलाओं का गायन किया। इस तरह उन दोनों ने महाप्रभु की बाह्य चेतना लौटाई।

এই-মত অর্ধ-রাত্রি কৈলা নির্যাপণ ।
ভিতর-প্রকোষ্ঠে প্রভুরে করাইলা শয়ন ॥৫৭॥

एइ-मत अर्ध-रात्रि कैला निर्य्यापण ।
भितर-प्रकोष्ठे प्रभुरे कराइला शयन ॥५७॥

एइ-मत—इस प्रकार; **अर्ध-रात्रि**—आधी रात; **कैला निर्य्यापण**—बिताई; **भितर-प्रकोष्ठे**—भीतरी कमरे में; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कराइला शयन**—शय्या पर लिटाया।

अनुवाद

इस प्रकार आधी रात बीत जाने पर रामानन्द राय तथा स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने श्री चैतन्य महाप्रभु को भीतरी कमरे में शय्या पर लिटाया।

রামানন্দ-রায় তবে গেলা নিজ ঘরে ।
স্বরূপ-গোবিন্দ দুঁহে শুইলেন দ্বারে ॥৫৮॥
रामानन्द-राय तबे गेला निज घरे ।
स्वरूप-गोविन्द दुँहे शुइलेन द्वारे ॥५८॥

रामानन्द-राय—रामानन्द राय; **तबे**—तब; **गेला**—गये; **निज घरे**—उनके घर; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **गोविन्द**—तथा गोविन्द; **दुँहे**—दोनों; **शुइलेन**—लेट गये; **द्वारे**—दरवाजे पर।

अनुवाद

तब रामानन्द राय घर लौट आये और स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा गोविन्द श्री चैतन्य महाप्रभु के कमरे के दरवाजे के सामने लेट गये।

সব রাত্রি মহাপ্রভু করে জাগরণ ।
উচ্চ করি' কহে কৃষ্ণ-নাম-সঙ্কীর্তন ॥৫৯॥
सब रात्रि महाप्रभु करे जागरण ।
उच्च करि' कहे कृष्ण-नाम-सङ्कीर्तन ॥५९॥

सब रात्रि—सारी रात; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करे**—करते; **जागरण**—जागरण; **उच्च करि'**—उच्च स्वर में; **कहे कृष्ण-नाम-सङ्कीर्तन**—हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन करते।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु सारी रात उच्च स्वर से हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन करते हुए जागते रहे।

শব্দ না পাঞা স্বরূপ কপাট কৈলা দূরে ।
তিন-দ্বার দেওয়া আছে, প্রভু নাহি ঘরে! ॥৬০॥

শব্দ না পাঞা স্বরূপ কপাট কৈলা দূরে ।
তিন-দ্বার দেওয়া আছে, প্রভু নাহি ঘরে! ॥৬০॥

শব্দ—आवाज; **না**—नहीं; **পাঞা**—सुनकर; **স্বরূপ**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **কপাট**—दरवाजा; **কৈলা দূরে**—खोल दिया; **তিন-দ্বার**—तीर दरवाजों को; **দেওয়া আছে**—ताले लगे थे; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **নাহি ঘরে**—कमरे में नहीं थे।

अनुवाद

कुछ देर बाद स्वरूप दामोदर को श्री चैतन्य महाप्रभु का जप करना नहीं सुनाई पड़ा। जब वे कमरे के भीतर गये, तो उन्होंने देखा कि तीनों दरवाजों पर ताले लगे हैं, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु वहाँ नहीं हैं।

চিন্তিত হ-ইল সবে প্রভুরে না দেখিয়া ।
প্রভু চাহি' বুলে সবে দেউটী জ্বালিয়া ॥৬১॥

চিন্তিত হ-ইল সবে প্রভুরে না দেখিয়া ।
প্রভু চাহি' বুলে সবে দেউটী জ্বালিয়া ॥৬১॥

চিন্তিত হ-ইল—अत्यन्त चिन्तित हो उठे; **সবে**—सभी भक्त; **প্রভুরে**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **না দেখিয়া**—न देखकर; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **চাহি'**—ढूँढ़ने के लिए; **বুলে**—घूमने लगे; **সবে**—सभी जन; **দেউটী**—दीपक; **জ্বালিয়া**—जलाकर।

अनुवाद

जब सारे भक्तों ने देखा कि महाप्रभु अपने कमरे में नहीं हैं, तो वे अत्यन्त चिन्तित हो उठे। वे दीपक जलाकर उन्हें ढूँढ़ने के लिए इधर-उधर घूमने लगे।

সিংহ-দ্বারের উত্তর-দিশায় আছে এক ঠাঞি ।
তার মধ্যে পড়ি' আছেন চৈতন্য-গোসাঞি ॥৬২॥

সিংহ-দ্বারের উত্তর-দিশায় আছে এক ঠাঞি ।
তার মধ্যে পড়ি' আছেন চৈতন্য-গোসাঞি ॥৬২॥

सिंह-द्वारेर—सिंहद्वार में; **उत्तर-दिशाय**—उत्तर दिशा की ओर; **आछे**—वहाँ थे; **एक ठाञि**—एक जगह; **तार मध्ये**—एक कोने में; **पड़ि'**—नीचे लेटे; **आछेन**—थे; **चैतन्य-गोसाञि**—श्री चैतन्य महाप्रभु।

अनुवाद

कुछ देर ढूँढ़ने के बाद उन्हें श्री चैतन्य महाप्रभु सिंहद्वार से उत्तर की दिशा में एक कोने में लेटे मिले।

देखि' स्वरूप-गोसाञि-आदि आनन्दित हैला ।
प्रभुर दशा देखि' पुनः चिन्तिते लागिला ॥६३॥

देखि' स्वरूप-गोसाञि-आदि आनन्दित हैला ।
प्रभुर दशा देखि' पुनः चिन्तिते लागिला ॥६३॥

देखि'—देखकर; **स्वरूप-गोसाञि-आदि**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी और आदि सारे भक्त; **आनन्दित हैला**—आनन्दित हो गये; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **दशा**—दशा; **देखि'**—देखकर; **पुनः**—फिर से; **चिन्तिते लागिला**—चिन्तित हो उठे।

अनुवाद

पहले तो उन्हें देखकर स्वरूप दामोदर गोस्वामी इत्यादि सारे भक्त आनन्दित हो गये, किन्तु जब उन्होंने उनकी दशा देखी, तो वे चिन्तित हो उठे।

प्रभु पड़ि' आछेन दीर्घ हात पाँच-छय ।
अचेतन देह, नासाय श्वास नाहि वय ॥६४॥

प्रभु पड़ि' आछेन दीर्घ हात पाँच-छय ।
अचेतन देह, नासाय श्वास नाहि वय ॥६४॥

प्रभु—प्रभु; **पड़ि' आछेन**—नीचे लेटे थे; **दीर्घ**—लम्बा; **हात पाँच-छय**—पाँच से छह हाथ (एक हाथ लगभग डेढ़ फूट जितना होता है); **अचेतन देह**—अचेतन देह; **नासाय**—नथुनों से; **श्वास**—श्वास; **नाहि वय**—नहीं निकल रही।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु अचेत लेटे थे और उनका शरीर लम्बा होकर पाँच-छह हाथ का हो गया था। उनके नथुनों से श्वास नहीं निकल रही थी।

এক এক হস্ত-পাদ——দীর্ঘ তিন তিন-হাত ।
অস্থি-গ্রন্থি ভিন্ন, চর্ম আছে মাত্র তাত ॥৬৫॥
হস্ত, পাদ, গ্রীবা, কটি, অস্থি সন্ধি যত ।
এক এক বিতস্তি ভিন্ন হঞাছে তত ॥৬৬॥

एक एक हस्त-पाद——दीर्घ तिन तिन-हात ।
अस्थि-ग्रन्थि भिन्न, चर्म आछे मात्र तात ॥ ६५ ॥
हस्त, पाद, ग्रीवा, कटि, अस्थि सन्धि यत ।
एक एक वितस्ति भिन्न हआछे तत ॥ ६६ ॥

एक एक—हर एक; **हस्त-पाद**—हाथ और पाँव; **दीर्घ**—लम्बे; **तिन तिन-हात**—तीन तीन हाथ; **अस्थि-ग्रन्थि**—हड्डीयों का जोड़; **भिन्न**—अलग अलग; **चर्म**—चमड़ी; **आछे**—थी; **मात्र**—केवल; **तात**—जीवन सूचक थोड़ा शारीरिक तापमान; **हस्त**—हाथ; **पाद**—पाँव; **ग्रीवा**—गरदन; **कटि**—कमर; **अस्थि**—हड्डियाँ; **सन्धि**—जोड़; **यत**—जितने भी; **एक**—एक; **एक**—एक; **वितस्ति**—छः इंच; **भिन्न**—अलग; **हआछे**—थे; **तत**—बहुत सारे।

अनुवाद

उनके हाथ तथा पाँव तीन-तीन हाथ लम्बे हो गये थे। उनके अलग-अलग हुए जोड़ों को केवल चमड़ी बाँधे थी। जीवन-सूचक, महाप्रभु का शारीरिक तापमान, अत्यन्त कम था। उनके हाथ, पाँव, गरदन तथा कमर के सारे जोड़ कम से कम छः इंच अलग हो चुके थे।

চর্ম-মাত্র উপরে, সন্ধি আছে দীর্ঘ হঞা ।
দুঃখিত হ-ইলা সবে প্রভুরে দেখিয়া ॥৬৭॥

चर्म-मात्र उपरे, सन्धि आछे दीर्घ हआ ।
दुःखित ह-इला सबे प्रभुरे देखिया ॥ ६७ ॥

चर्म-मात्र—सिर्फ चमड़ी; **उपरे**—ऊपर; **सन्धि**—जोड़ों; **आछे**—थे; **दीर्घ**—लम्बे; **हआ**—थे; **दुःखित**—दुःखी; **ह-इला**—हुई; **सबे**—सारे भक्त; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **देखिया**—देखकर।

अनुवाद

ऐसा प्रतीत होता था मानो उनके लम्बायमान जोड़ों को केवल चमड़ी ढके हुए थी। महाप्रभु की दशा देखकर सारे भक्त दुःखी हुए।

মুখে লালা-ফেন প্রভুর উত্তান-নয়ান ।
দেখিয়া সকল ভক্তের দেহ ছাড়ে প্রাণ ॥৬৮॥

मुखे लाला-फेन प्रभुर उत्तान-नयान ।
देखिया सकल भक्तेर देह छाड़े प्राण ॥६८॥

मुखे—मुँह को; **लाला**—लार; **फेन**—झाग; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **उत्तान**—उलटी; **नयान**—आँखे; **देखिया**—देखकर; **सकल भक्तेर**—सभी भक्त; **देह**—शरीर; **छाड़े**—छोड़कर; **प्राण**—प्राण।

अनुवाद

जब उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु के मुँह को लार तथा झाग से भरा तथा आँखों को उलटी हुई देखा, तो वे सभी मृतप्राय हो गये।

স্বরূপ-গোসাঞি তবে উচ্চ করিয়া ।
প্রভুর কাণে কৃষ্ণ-নাম কহে ভক্ত-গণ লঞা ॥৬৯॥

स्वरूप-गोसाञि तबे उच्च करिया ।
प्रभुर काणे कृष्ण-नाम कहे भक्त-गण लञा ॥६९॥

स्वरूप-गोसाञि—स्वरूप दामोदर गोसांइ; **तबे**—उस समय; **उच्च करिया**—जोर से; **प्रभुर काणे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के कान में; **कृष्ण-नाम**—भगवान् कृष्ण के पवित्र नाम का; **कहे**—उच्चारण करने लगे; **भक्त-गण लञा**—सारे भक्त।

अनुवाद

जब उन्होंने यह सब देखा, तो स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा अन्य सारे भक्त महाप्रभु के कान में जोर-जोर से कृष्ण नाम का उच्चारण करने लगे।

বহু-ক্ষণে কৃষ্ণ-নাম হৃদয়ে পশিলা ।
'হরি-বোল' বলি' প্রভু গর্জিয়া উঠিলা ॥৭০॥

बहु-क्षणे कृष्ण-नाम हृदये पशिला ।
'हरि-बोल' बलि' प्रभु गर्जिया उठिला ॥७०॥

बहु-क्षणे—लम्बे समय के बाद; **कृष्ण-नाम**—भगवान् कृष्ण का पवित्र नाम; **हृदये**

पशिला—हृदय में प्रविष्ट हुआ; **हरि-बोल बलि'**—"हरि बोल" कहने लगे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **गर्जिया**—गर्जना करते हुए; **उठिला**—उठे।

अनुवाद

जब वे इस तरह देर तक उच्चारण करते रहे, तब कृष्ण का पवित्र नाम श्री चैतन्य महाप्रभु के हृदय में प्रविष्ट हुआ और वे "हरि बोल" की गर्जना करते हुए सहसा उठ गये।

চেতন পাইতে অস্থি-সন্ধি লাগিল ।
পূর্ব-প্রায় যথাবচ্ছরীর হ-ইল ॥৭১॥

चेतन पाइते अस्थि-सन्धि लागिल ।
पूर्व-प्राय यथावत् शरीर ह-इल ॥७१॥

चेतन पाइते—बाह्य चेतना लौट आने पर; **अस्थि-सन्धि**—हड्डियों के जोड़; **लागिल**—सिकुड़ गये; **पूर्व-प्राय**—पहले की तरह; **यथावत्**—सामान्य अवस्था में; **शरीर**—शरीर; **ह-इल**—हो गया।

अनुवाद

जैसे ही महाप्रभु की बाह्य चेतना लौट आई, उनके सारे जोड़ सिकुड़ गये और उनका सारा शरीर सामान्य हो गया।

এই লীলা মহাপ্রভুর রঘুনাথ-দাস ।
'গৌরাঙ্গ-স্তব-কল্পবৃক্ষে' করিয়াছে প্রকাশ ॥৭২॥

एइ लीला महाप्रभुर रघुनाथ-दास ।
'गौराङ्ग-स्तव-कल्पवृक्षे' करियाछे प्रकाश ॥७२॥

एइ लीला—इन लीलाओं; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **रघुनाथ-दास**—रघुनाथ दास गोस्वामी; **गौराङ्ग-स्तव-कल्प-वृक्षे**—*गौराङ्ग स्तव कल्पवृक्ष* नामक पुस्तक में; **करियाछे प्रकाश**—वर्णन किया है।

अनुवाद

श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी ने इन लीलाओं का विस्तृत वर्णन अपनी पुस्तक 'गौरांग स्तव कल्पवृक्ष' में किया है।

ক্বচিন্নিশ্রাবাসে ব্রজ-পতি-সুতস্যোরু-বিরহাৎ
শ্লথচ্ছ্রী-সন্ধিত্বাদ্দধদধিক-দৈর্ঘ্যং ভুজ-পদোঃ ।
লুঠন্ভূমৌ কাকা বিকল-বিকলং গদগদ-বচা
রুদন্শ্রী-গৌরাঙ্গো হৃদয় উদয়ন্মাং মদয়তি ॥৭৩॥

क्वचिन्मिश्रावासे व्रज-पति-सुतस्योरु-विरहात्
श्लथच्छ्री-सन्धित्वाद्दधदधिक-दैर्घ्यं भुज-पदोः ।
लुठन्भूमौ काक्वा विकल-विकलं गद्गद-वचा
रुदन्श्री-गौराङ्गो हृदय उदयन्मां मदयति ॥७३॥

क्वचित्—कभी-कभी; **मिश्र-आवासे**—काशी मिश्र के घर में; **व्रज-पति-सुतस्य**—नन्द महाराज के पुत्र से; **उरु-विरहात्**—वियोग के तीव्र भाव से; **श्लथत्**—ढीले पड़कर; **श्री-सन्धित्वात्**—उनके दिव्य शरीर के जोड़ों से; **दधत्**—पाकर; **अधिक-दैर्घ्यम्**—ज्यादा लम्बा होना; **भुज-पदोः**—हाथ पाँव; **लुठन्**—लोटते; **भूमौ**—जमीन पर; **काक्वा**—विलाप में रोते; **विकल-विकलम्**—अत्यन्त शोक से; **गद्गद-वचा**—अवरुद्ध वाणी से; **रुदन्**—रोते; **श्री-गौराङ्गः**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हृदये**—हृदय में; **उदयन्**—उदित होकर; **माम्**—मुझे; **मदयति**—उन्मत्त बनाते हैं।

अनुवाद

"कभी-कभी श्री चैतन्य महाप्रभु काशी मिश्र के घर में कृष्ण के वियोग का अनुभव करते हुए अत्यधिक दुःखी होते। उनके दिव्य शरीर के जोड़ ढीले पड जाते और उनके हाथ-पाँव लम्बे हो जाते। भूमि पर लोटते हुए महाप्रभु अवरुद्ध वाणी से व्यथा के कारण विलाप करते और अत्यन्त शोक संतप्त होकर रोते। श्री चैतन्य महाप्रभु का यह दृश्य मेरे हृदय में उदित होकर मुझे उन्मत्त बनाता है।"

तात्पर्य

यह श्लोक *गौराङ्ग स्तव कल्पवृक्ष* (४) से है।

সিংহ-দ্বারে দেখি' প্রভুর বিস্ময় হ-ইলা ।
'কাঁহা কর কি'—এই স্বরূপে পুছিলা ॥৭৪॥

सिंह-द्वारे देखि' प्रभुर विस्मय ह-इला ।
'काँहा कर कि'—एइ स्वरूपे पुछिला ॥७४॥

सिंह-द्वारे—सिंहद्वार के नाम के द्वार पर; **देखि'**—देखकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **विस्मय ह-इला**—चकित थे; **काँहा**—कहाँ; **कर कि'**—मैं क्या कर रहा हूँ; **एइ**—यह; **स्वरूपे पुछिला**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी से पूछा।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु अपने आपको सिंहद्वार के सामने पाकर अत्यधिक चकित हुए। उन्होंने स्वरूप दामोदर गोस्वामी से पूछा, "मैं कहाँ हूँ? मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ?"

স্বরূপ কহে,—'উঠ, প্রভু, চল নিজ-ঘরে ।
তথাই তোমারে সব করিমু গোচরে' ॥৭৫॥

स्वरूप कहे,—'उठ, प्रभु, चल निज-घरे ।
तथाइ तोमारे सब करिमु गोचरे' ॥७५॥

स्वरूप कहे—स्वरूप दामोदर ने कहा; **उठ प्रभु**—हे प्रभु, कृपया उठिये; **चल**—चलिये; **निज-घरे**—आपके स्थान पर; **तथाइ**—वहाँ; **तोमारे**—आपको; **सब**—सब; **करिमु गोचरे**—मैं बताता हूँ।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने कहा, "हे प्रभु, कृपया उठिये। चलिये, आपके स्थान पर चलें। जो कुछ हुआ है, वहीं मैं आपको सब कुछ बतला दूँगा।"

এত বলি' প্রভুরে ধরি' ঘরে লঞা গেলা ।
তাঁহার অবস্থা সব কহিতে লাগিলা ॥৭৬॥

एत बलि' प्रभुरे धरि' घरे लञा गेला ।
ताँहार अवस्था सब कहिते लागिला ॥७६॥

एत बलि'—यह कहकर; **प्रभुरे धरि'**—श्री चैतन्य महाप्रभु को सहारा देते हुए; **घरे**—घर; **लञा गेला**—वापस गये; **ताँहार अवस्था**—उनकी अवस्था; **सब**—सभी जन; **कहिते लागिला**—कहने लगे।

अनुवाद

इस तरह सारे भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु को सहारा देते हुए उन्हें उनके घर लौटा ले गये। तब उन्होंने जो कुछ हुआ था सब बतलाया।

শুনি' মহাপ্রভু বড় হৈলা চমত্কার ।
প্রভু কহে,—'কিছু স্মৃতি নাহিক আমার ॥৭৭॥

शुनि' महाप्रभु बड़ हैला चमत्कार ।
प्रभु कहे,—'किछु स्मृति नाहिक आमार ॥७७॥

शुनि'—सुनकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **बड़**—बहुत; **हैला चमत्कार**—आश्चर्यचकित हुए; **प्रभु कहे**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **किछु**—कोई; **स्मृति**—स्मरण; **नाहिक**—नहीं है; **आमार**—अपना।

अनुवाद

सिंहद्वार के निकट लेटे हुए अपनी दशा का वर्णन सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु अत्यधिक आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने कहा, "मुझे इनमें से किसी भी बात का स्मरण नहीं है।

সবে দেখি—হয় মোর কৃষ্ণ বিদ্যমান ।
বিদ্যুত্প্রায় দেখা দিয়া হয় অন্তর্ধান' ॥৭৮॥

सबे देखि—हय मोर कृष्ण विद्यमान ।
विद्युत्प्राय देखा दिया हय अन्तर्धान' ॥७८॥

सबे—सिर्फ इतना ही; **देखि**—देखकर; **हय**—है; **मोर**—मेरे; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **विद्यमान**—समक्ष प्रकट हुए; **विद्युत्-प्राय**—बिजली की तरह; **देखा दिया**—प्रकट होकर; **हय**—हो गये; **अन्तर्धान**—अन्तर्धान।

अनुवाद

"मुझे केवल इतना ही स्मरण है कि मैंने अपने कृष्ण को देखा, किन्तु मात्र एक क्षण के लिए। वे मेरे समक्ष प्रकट हुए और फिर बिजली की तरह तुरन्त अन्तर्धान हो गये।"

হেন-কালে জগন্নাথের পাণি-শঙ্খ বাজিলা ।
স্নান করি' মহাপ্রভু দরশনে গেলা ॥৭৯॥

हेन-काले जगन्नाथेर पाणि-शङ्ख बाजिला ।
स्नान करि' महाप्रभु दरशने गेला ॥७९॥

हेन-काले—उसी समय; **जगन्नाथेर**—भगवान् जगन्नाथ के; **पाणि-शङ्ख**—शंख जो हाथ में पकड़ा जाता है; **बाजिला**—बजा; **स्नान करि'**—स्नान के बाद; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **दरशने गेला**—भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने गये।

अनुवाद

उसी समय सबों ने जगन्नाथ मन्दिर में शंख बजने की ध्वनि सुनी। श्री चैतन्य महाप्रभु ने तुरन्त स्नान किया और जगन्नाथ जी का दर्शन करने चले गये।

एइ त' कहिलुँ प्रभुर अद्भुत विकार ।
याहार श्रवणे लोके लागे चमत्कार ॥८०॥

एइ त' कहिलुँ प्रभुर अद्भुत विकार ।
याहार श्रवणे लोके लागे चमत्कार ॥८०॥

एइ त'—इस तरह; **कहिलुँ**—मैंने वर्णन किया है; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **अद्भुत विकार**—देह के असामान्य विकारों का; **याहार श्रवणे**—जिसे सुनकर; **लोके**—लोग; **लागे**—अनुभव करते हैं; **चमत्कार**—आश्चर्य।

अनुवाद

इस तरह से मैंने श्री चैतन्य महाप्रभु के शरीर के असामान्य विकारों का वर्णन किया है। जब लोग इसके विषय में सुनते हैं, तो वे अत्यन्त चकित होते हैं।

लोके नाहि देखि ऐछे, शास्त्रे नाहि शुनि ।
हेन भाव व्यक्त करे न्यासि-चूड़ामणि ॥८१॥

लोके नाहि देखि ऐछे, शास्त्रे नाहि शुनि ।
हेन भाव व्यक्त करे न्यासि-चूड़ामणि ॥८१॥

लोके—लोगों में; **नाहि देखि**—हम नहीं देखते; **ऐछे**—ऐसा; **शास्त्रे**—शास्त्र में; **नाहि शुनि**—हम नहीं सुनते; **हेन**—ऐसा; **भाव**—भाव; **व्यक्त करे**—व्यक्त किया; **न्यासि-चूड़ामणि**—परम संन्यासी।

अनुवाद

न तो किसी ने अन्यत्र ऐसे शारीरिक परिवर्तन देखे हैं, न ही शास्त्रों

में उनके विषय में किसी ने पढ़ा है। फिर भी परम संन्यासी श्री चैतन्य महाप्रभु ने इन दिव्य लक्षणों को प्रकट किया।

शास्त्र-लोकातीत येई येई भाव हय ।
इतर-लोकेर ताते ना हय निश्चय ॥ ८२॥

शास्त्र-लोकातीत येइ येइ भाव हय ।
इतर-लोकेर ताते ना हय निश्चय ॥ ८२॥

शास्त्र-लोक-अतीत—लोगों तथा शास्त्रों की धारणा से परे; **येइ येइ**—जो जो; **भाव**—भाव; **हय**—हैं; **इतर-लोकेर**—सामान्य लोगों के; **ताते**—उसमें; **ना हय**—नहीं है; **निश्चय**—विश्वास।

अनुवाद

इन भावों का शास्त्रों में वर्णन नहीं हुआ है और वे सामान्य लोगों के लिए अचिन्त्य हैं। इसलिए सामान्य लोग उनमें विश्वास नहीं करते।

रघुनाथ-दासेर सदा प्रभु-सङ्गे स्थिति ।
ताँर मुखे शुनि' लिखि करिया प्रतीति ॥ ८३॥

रघुनाथ-दासेर सदा प्रभु-सङ्गे स्थिति ।
ताँर मुखे शुनि' लिखि करिया प्रतीति ॥ ८३॥

रघुनाथ-दासेर—रघुनाथ दास गोस्वामी के; **सदा**—हमेशा; **प्रभु-सङ्गे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **स्थिति**—रहते थे; **ताँर मुखे**—उनके मुँह से निकला हुआ; **शुनि'**—सुनकर; **लिखि**—मैं लिखता हूँ; **करिया प्रतीति**—विश्वास करना।

अनुवाद

रघुनाथ दास गोस्वामी लगातार श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ रहते थे। मैंने उनसे जो कुछ सुना है, उसे ही मैं लिख रहा हूँ। यद्यपि सामान्य लोग इन लीलाओं में विश्वास नहीं करते, किन्तु मैं उनमें पूरी तरह से विश्वास करता हूँ।

एक-दिन महाप्रभु समुद्रे याइते ।
'चटक'-पर्वत देखिलेन आचम्बिते ॥ ८४॥

एक-दिन महाप्रभु समुद्रे ग्याइते ।
'चटक'-पर्वत देखिलेन आचम्बिते ॥ ८४॥

एक-दिन—एक दिन; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **समुद्रे ग्याइते**—समुद्र जाने के समय; **चटक-पर्वत**—चटक पर्वत नामक बालू का टीला; **देखिलेन**—देखा; **आचम्बिते**—अचानक।

अनुवाद

एक दिन जब श्री चैतन्य महाप्रभु समुद्र स्नान करने जा रहे थे, तब उन्होंने सहसा बालू का टीला देखा, जिसका नाम चटक पर्वत था।

गोवर्धन-शैल-ज्ञाने आविष्ट ह-ईला ।
पर्वत-दिशाते प्रभु धाञा चलिला ॥ ८५॥

गोवर्धन-शैल-ज्ञाने आविष्ट ह-इला ।
पर्वत-दिशाते प्रभु धाञा चलिला ॥ ८५॥

गोवर्धन-शैल—गोवर्धन पर्वत; **ज्ञाने**—भ्रम होकर; **आविष्ट ह-इला**—प्रेमाविष्ट हो गये; **पर्वत-दिशाते**—बालू के टीले की ओर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **धाञा चलिला**—दोड़ने लगे।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु को इस बालू के टीले में गोवर्धन पर्वत का भ्रम हो गया और वे उसकी ओर दौड़ने लगे।

हन्तायमद्रिरबला हरि-दास-वर्यो
यद्राम-कृष्ण-चरण-स्परश-प्रमोदः ।
मानं तनोति सह-गो-गणयोस्तयोर्यत्
पानीय-सूयवस-कन्दर-कन्द-मूलैः ॥ ८६॥

हन्तायमद्रिरबला हरि-दास-वर्यो
यद्राम-कृष्ण-चरण-स्परश-प्रमोदः ।
मानं तनोति सह-गो-गणयोस्तयोर्यत्
पानीय-सूयवस-कन्दर-कन्द-मूलैः ॥ ८६॥

हन्त—ओह; **अयम्**—यह; **अद्रिः**—पर्वत; **अबलाः**—हे मित्रों; **हरि-दास-वर्यः**—भगवान् के अच्छे सेवकों में श्रेष्ठ; **यत्**—क्योंकि; **राम-कृष्ण-चरण**—भगवान् कृष्ण और

बलराम के चरणकमलों का; **स्पर्श**—स्पर्श पाकर; **प्रमोदः**—प्रसन्न; **मानम्**—आदर; **तनोति**—प्रदान करता; **सह**—के साथ; **गो-गणयोः**—गायों, बछड़ों और ग्वाल मित्रों; **तयोः**—उनको (श्रीकृष्ण और बलराम); **ग्रत्**—क्योंकि; **पानीय**—पीने के लिए जल; **सूयवस**—अत्यन्त कोमल घास; **कन्दर**—गुफाएँ; **कन्द-मूलैः**—तथा वनस्पतियाँ।

अनुवाद

"(श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा :) 'समस्त भक्तों में यह गोवर्धन पर्वत सर्वश्रेष्ठ है! हे मित्रों, यह पर्वत कृष्ण तथा बलराम एवं उनके बछड़ों, गायों तथा ग्वाल मित्रों की सभी प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह पीने के लिए जल, अत्यन्त कोमल घास, गुफाएँ, फल, फूल तथा वनस्पतियाँ प्रदान करता है। इस तरह यह पर्वत भगवान् को नमस्कार करता है। कृष्ण तथा बलराम के चरणकमलों का स्पर्श पाकर यह अत्यन्त हर्षित प्रतीत होता है।'"

तात्पर्य

यह उद्धरण *श्रीमद्भागवत* (१०.२१.१८) से है। जब शरद ऋतु में कृष्ण तथा बलराम जंगल में प्रविष्ट हुए, तब इस श्लोक को गोपियों ने कहा था। गोपियाँ परस्पर बातें करके कृष्ण तथा बलराम की लीलाओं का गुणगान करने लगीं।

एइ श्लोक पड़ि' प्रभु चलेन वायु-वेगे ।
गोविन्द धाइल पाछे, नाहि पाय लागे ॥ ८७॥

एइ श्लोक पड़ि' प्रभु चलेन वायु-वेगे ।
गोविन्द धाइल पाछे, नाहि पाय लागे ॥ ८७॥

एइ श्लोक—यह श्लोक; **पड़ि'**—उच्चारण करते हुए; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **चलेन**—जाने लगे; **वायु-वेगे**—वायु के वेग से; **गोविन्द**—गोविन्द; **धाइल**—दौड़ा; **पाछे**—पीछे; **नाहि पाय लागे**—पकड़ नहीं सका।

अनुवाद

यह श्लोक का उच्चारण करते हुए महाप्रभु वायु के वेग से उस बालू के टीले की ओर दौड़ने लगे। गोविन्द उनके पीछे-पीछे दौड़ा, किन्तु वह उनके पास नहीं पहुँच सका।

ফুকার পড়িল, মহা-কোলাহল হ-ইল ।
যেই যাহাঁ ছিল সেই উঠিয়া ধাইল ॥৮৮॥

ফুকার পড়িল, মহা-কোলাহল হ-ইল ।
যেই যাহাঁ ছিল সেই উঠিয়া ধাইল ॥৮৮॥

ফু-কার—জোর से चिल्लाया; **পড়িল**—उठकर; **মহা-কোলাহল**—कोलाहल; **হ-ইল**—होने लगा; **যেই**—जो भी; **যাহাঁ**—जहाँ भी; **ছিল**—थे; **সেই**—वे; **উঠিয়া ধাইল**—उठकर दौड़ने लगे।

अनुवाद

पहले एक भक्त जोर से चिल्लाया और फिर जब सारे भक्त उठकर महाप्रभु के पीछे दौड़ने लगे, तो कोलाहल होने लगा।

স্বরূপ, জগদানন্দ, পণ্ডিত-গদাধর ।
রামাই, নন্দাই, আর পণ্ডিত শঙ্কর ॥৮৯॥

স্বরূপ, জগদানন্দ, পণ্ডিত-গদাধর ।
রামাই, নন্দাই, আর পণ্ডিত শঙ্কর ॥৮৯॥

স্বরূপ—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **জগদানন্দ**—जगदानन्द पण्डित; **পণ্ডিত-গদাধর**—गदाधर पण्डित; **রামাই**—रामाइ; **নন্দাই**—नन्दाइ; **আর**—तथा; **পণ্ডিত-শঙ্কর**—शंकर पण्डित।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के पीछे दौड़ने वाले कुछ अन्य भक्तगण थे—स्वरूप दामोदर गोस्वामी, जगदानन्द पण्डित, गदाधर पण्डित, रामाइ, नन्दाइ तथा शंकर पण्डित।

পুরী-ভারতী-গোসাঞি আইলা সিন্ধু-তীরে ।
ভগবানাচার্য খঞ্জ চলিলা ধীরে ধীরে ॥৯০॥

পুরী-ভারতী-গোসাঞি আইলা সিন্ধু-তীরে ।
ভগবানাচার্য্য খঞ্জ চলিলা ধীরে ধীরে ॥৯০॥

পুরী—परमानन्द पुरी; **ভারতী-গোসাঞি**—ब्रह्मानन्द भारती; **আইলা**—आये; **সিন্ধু-**

तीरे—समुद्रतट की ओर; **भगवान्-आचार्य्य**—भगवान् आचार्य; **खञ्ज**—लँगड़े; **चलिला**—चल रहे थे; **धीरे धीरे**—धीरे धीरे।

अनुवाद

परमानन्द पुरी तथा ब्रह्मानन्द भारती भी समुद्रतट की ओर गये और भगवान् आचार्य जो कि लँगड़े थे, उनके पीछे धीरे-धीरे चल रहे थे।

प्रथमे चलिला प्रभु,—येन वायु-गति ।
स्तम्भ-भाव पथे हैल, चलिते नाहि शक्ति ॥ ९१ ॥

प्रथमे चलिला प्रभु,—येन वायु-गति ।
स्तम्भ-भाव पथे हैल, चलिते नाहि शक्ति ॥ ९१ ॥

प्रथमे—पहले; **चलिला**—चल रहे थे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **येन**—जैसे; **वायु-गति**—वायु की गति; **स्तम्भ-भाव**—भावावेश में स्तम्भित हुए; **पथे**—रास्ते में; **हैल**—हुए; **चलिते**—चलने की; **नाहि**—नहीं; **शक्ति**—शक्ति।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु वायु की गति से दौड़ रहे थे, किन्तु सहसा भावावेश में वे स्तम्भित हो गये, जिससे आगे चल पाने की उनकी सारी शक्ति जाती रही।

प्रति-रोम-कूपे मांस—व्रणेर आकार ।
तार उपरे रोमोद्गम—कदम्ब-प्रकार ॥ ९२ ॥

प्रति-रोम-कूपे मांस—व्रणेर आकार ।
तार उपरे रोमोद्गम—कदम्ब-प्रकार ॥ ९२ ॥

प्रति-रोम-कूपे—प्रत्येक रोम कूप में; **मांस**—मांस; **व्रणेर आकार**—फुंसियों की तरह; **तार उपरे**—उसके ऊपर; **रोम-उद्गम**—रोमांच हुआ; **कदम्ब-प्रकार**—कदम्ब के फूलों जैसा।

अनुवाद

उनका हर रोमकूप फुंसियों की तरह फूट पड़ा और उनके शरीर के बाल खड़े हो गये, जो कदम्ब के फूलों जैसे प्रतीत होने लगे।

প্রতি-রোমে প্রস্বেদ পড়ে রুধিরের ধার ।
কন্ঠ্ ঃএ ঘর্ঘর, নাহি বর্ণের উচ্চার ॥৯৩॥

प्रति-रोमे प्रस्वेद पड़े रुधिरेर धार ।
कण्ठे घर्घर, नाहि वर्णेर उच्चार ॥ ९३ ॥

प्रति-रोमे—हर रोमकूप से; **प्रस्वेद**—पसीना; **पड़े**—बहने लगा; **रुधिरेर**—रक्त की तरह; **धार**—बहने से; **कण्ठे**—गले से; **घर्घर**—घर्राहट की आवाज; **नाहि**—नहीं; **वर्णेर**—एक शब्द भी; **उच्चार**—बोल सकते।

अनुवाद

उनके शरीर के हर रोमकूप से रक्त तथा पसीना लगातार बहने लगा। वे एक शब्द भी नहीं बोल सकते थे; वे अपने गले से केवल घर्राहट का शब्द उत्पन्न कर रहे थे।

দুই নেত্রে ভরি' অশ্রু বহয়ে অপার ।
সমুদ্রে মিলিলা যেন গঙ্গা-যমুনা-ধার ॥৯৪॥

दुइ नेत्रे भरि' अश्रु वहये अपार ।
समुद्रे मिलिला य़ेन गङ्गा-य़मुना-धार ॥ ९४ ॥

दुइ नेत्रे—दोनों आँखों में; **भरि'**—भरकर; **अश्रु**—अश्रु; **वहये**—बहने लगे; **अपार**—अपार; **समुद्रे**—समुद्र; **मिलिला**—मिलके; **य़ेन**—जैसे की; **गङ्गा**—गंगा की; **य़मुना**—यमुना की; **धार**—धारा।

अनुवाद

महाप्रभु की आँखे भर आईं और उनसे अपार अश्रु बहने लगे, मानो गंगा तथा यमुना नदियाँ समुद्र में मिल रही हों।

বৈবর্ণ্যে শঙ্খ-প্রায় শ্বেত হৈল অঙ্গ ।
তবে কম্প উঠে,—যেন সমুদ্রে তরঙ্গ ॥৯৫॥

वैवर्ण्ये शङ्ख-प्राय श्वेत हैल अङ्ग ।
तबे कम्प उठे,—य़ेन समुद्रे तरङ्ग ॥ ९५ ॥

वैवर्ण्ये—विवर्ण होकर; **शङ्ख-प्राय**—शंख के समान; **श्वेत**—श्वेत; **हैल**—हो गया; **अङ्ग**—अंग; **तबे**—तब; **कम्प**—कम्पन; **उठे**—उठी; **य़ेन**—जैसे; **समुद्रे**—समुद्र में; **तरङ्ग**—लहरें।

अनुवाद

उनका सम्पूर्ण शरीर विवर्ण होकर श्वेत शंख के रंग का हो गया और तब वे काँपने लगे, मानों समुद्र में लहरें उठ रही हों।

কাঁপিতে কাঁপিতে প্রভু ভূমেতে পড়িলা ।
তবে ত' গোবিন্দ প্রভুর নিকটে আইলা ॥৯৬॥

কাঁপিতে কাঁপিতে প্রভু ভূমেতে পড়িলা ।
তবে ত' গোবিন্দ প্রভুর নিকটে আইলা ॥ ৯৬ ॥

কাঁপিতে কাঁপিতে—काँपते काँपते; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ভূমেতে**—भूमि पर; **পড়িলা**—गिर पड़े; **তবে**—तब; **ত'**—निश्चय ही; **গোবিন্দ**—गोविन्द; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **নিকটে**—निकट; **আইলা**—आया।

अनुवाद

इस तरह काँपते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु भूमि पर गिर पड़े। तब गोविन्द उनके पास पहुँचा।

করঙ্গের জলে করে সর্বাঙ্গ সিঞ্চন ।
বহির্বাস লঞা করে অঙ্গ সংবীজন ॥৯৭॥

করঙ্গের জলে করে সর্বাঙ্গ সিঞ্চন ।
বহির্বাস লঞা করে অঙ্গ সংবীজন ॥ ৯৭ ॥

করঙ্গের জলে—करंग (कमंडल) के जल से; **করে**—किया; **সর্ব-অঙ্গ**—शरीर के सारे अंग; **সিঞ্চন**—छिड़का; **বহির্বাস**—बाह्य वस्त्र; **লঞা**—लेकर; **করে**—किया; **অঙ্গ**—शरीर; **সংবীজন**—पंखा झलने लगा।

अनुवाद

गोविन्द ने करंग (कमंडल) से महाप्रभु के सारे शरीर पर जल छिड़का और तब उनके ही उत्तरीय से वह श्री चैतन्य महाप्रभु पर पंखा झलने लगा।

স্বরূপাদি-গণ তাহাঁ আসিয়া মিলিলা ।
প্রভুর অবস্থা দেখি' কান্দিতে লাগিলা ॥৯৮॥

स्वरूपादि-गण ताहाँ आसिया मिलिला ।
प्रभुर अवस्था देखि' कान्दिते लागिला ॥ ९८ ॥

स्वरूप-आदि-गण—स्वरूप दामोदर गोस्वामी आदि भक्त; **ताहाँ**—वहाँ पर; **आसिया**—आकर; **मिलिला**—मिले; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **अवस्था**—अवस्था; **देखि'**—देखकर; **कान्दिते लागिला**—रोने लगे।

अनुवाद

जब स्वरूप दामोदर तथा अन्य भक्त उस स्थान पर पहुँचे और उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु की अवस्था देखी, तो वे रोने लगे।

प्रभुर अङ्गे देखे अष्ट-सात्त्विक विकार ।
आश्चर्य सात्त्विक देखि' हैला चमत्कार ॥ ९९ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **अङ्गे**—शरीर पर; **देखे**—उन्होंने देखा; **अष्ट-सात्त्विक विकार**—आठ प्रकार के दिव्य सात्त्विक विकार; **आश्चर्य**—आश्चर्य; **सात्त्विक**—सात्त्विक; **देखि'**—देखकर; **हैला चमत्कार**—आश्चर्यचकित हुए।

अनुवाद

महाप्रभु के शरीर में आठों प्रकार के दिव्य सात्त्विक विकार दृष्टिगोचर हो रहे थे। ऐसा दृश्य देखकर सारे भक्त आश्चर्यचकित हुए।

तात्पर्य

आठ सात्त्विक लक्षण हैं—स्तम्भ, प्रस्वेद, रोमांच, गद्गद् वाणी, कम्प, विवर्णता, अश्रु तथा मूर्छा।

उच्च सङ्कीर्तन करे प्रभुर श्रवणे ।
शीतल जले करे प्रभुर अङ्ग सम्मार्जने ॥ १०० ॥

उच्च—उच्च; **सङ्कीर्तन**—हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन; **करे**—किया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य

महाप्रभु की; **श्रवणे**—श्रवण मर्यादा में; **शीतल**—शीतल; **जले**—जल से; **करे**—किया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **अङ्ग**—शरीर; **सम्मार्जने**—नहलाया।

अनुवाद

भक्तों ने श्री चैतन्य महाप्रभु के निकट उच्च स्वर से हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन प्रारम्भ कर दिया और उनके शरीर को शीतल जल से नहलाया।

এই-মত বহু-বার কীর্তন করিতে ।
'হরি-বোল' বলি' প্রভু উঠে আচম্বিতে ॥১০১॥

এइ-मत बहु-बार कीर्तन करिते ।
'हरि-बोल' बलि' प्रभु उठे आचम्बिते ॥ १०१ ॥

एइ-मत—इस तरह; **बहु-बार**—देर तक; **कीर्तन करिते**—कीर्तन करते; **हरि-बोल बलि'**—"हरि बोल" कहते; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **उठे**—उठ खड़े हुए; **आचम्बिते**—अचानक।

अनुवाद

जब भक्तगण देर तक इसी तरह कीर्तन करते रहे, तब श्री चैतन्य महाप्रभु "हरि बोल" कहते हुए सहसा उठ खड़े हुए।

সানন্দে সকল বৈষ্ণব বলে 'হরি' 'হরি' ।
উঠিল মঙ্গল-ধ্বনি চতুর্দিক্ভরি' ॥১০২॥

सानन्दे सकल वैष्णव बले 'हरि' 'हरि' ।
उठिल मङ्गल-ध्वनि चतुर्दिक्भरि' ॥ १०२ ॥

स-आनन्दे—अत्यन्त प्रसन्नतावश; **सकल**—सभी; **वैष्णव**—भक्त; **बले**—बोले; **हरि हरि**—भगवान् का पवित्र नाम; **उठिल**—वहाँ उठा; **मङ्गल-ध्वनि**—शुभ ध्वनि; **चतुः-दिक्**—सभी दिशाओं में; **भरि'**—भरकर।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु उठ खड़े हुए, तो सारे वैष्णवों ने प्रसन्नतावश उच्च स्वर से "हरि! हरि!" का कीर्तन किया। यह शुभ ध्वनि सभी दिशाओं में भर गई।

উঠি' মহাপ্রভু বিস্মিত, ইতি উতি চায় ।
যে দেখিতে চায়, তাহা দেখিতে না পায় ॥ ১০৩॥

উঠি' মহাপ্রভু বিস্মিত, ইতি উতি চায় ।
যে দেখিতে চায়, তাহা দেখিতে না পায় ॥ ১০৩॥

উঠি'—खड़े होकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **विस्मित**—विस्मित होकर; **इति उति**—इधर-उधर; **चाय**—देखा; **ये**—क्या; **देखिते चाय**—वे देखना चाहते थे; **ताहा**—वह; **देखिते ना पाय**—वे देख नहीं पाये।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु विस्मित होकर खड़े हो गये और कुछ देखने के उद्देश्य से इधर-उधर देखने लगे। किन्तु वे उसे न देख पाये।

'বৈষ্ণব' দেখিয়া প্রভুর অর্ধ-বাহ্য হ-ইল ।
স্বরূপ-গোসাঞিরে কিছু কহিতে লাগিল ॥ ১০৪॥

'वैष्णव' देखिया प्रभुर अर्ध-बाह्य ह-इल ।
स्वरूप-गोसाञिरे किछु कहिते लागिल ॥ १०४॥

वैष्णव देखिया—वैष्णवों को देखकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **अर्ध-बाह्य**—आंशिक बाह्य चेतना; **ह-इल**—हो गई; **स्वरूप-गोसाञिरे**—स्वरूप गोस्वामी को; **किछु**—कुछ; **कहिते लागिल**—कहने लगे।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने सारे वैष्णवों को देखा, तो उनकी आंशिक बाह्य चेतना लौट आई और वे स्वरूप दामोदर से बोले।

"গোবর্ধন হৈতে মোরে কে ইহাঁ আনিল? ।
পাঞা কৃষ্ণের লীলা দেখিতে না পাইল ॥ ১০৫॥

"गोवर्धन हैते मोरे के इहाँ आनिल? ।
पाञा कृष्णेर लीला देखिते ना पाइल ॥ १०५॥

गोवर्धन हैते—गोवर्धन पर्वत से; **मोरे**—मुझे; **के**—कौन; **इहाँ**—यहाँ; **आनिल**—ले आया; **पाञा**—पाकर; **कृष्णेर लीला**—कृष्ण की लीलाएँ; **देखिते ना पाइल**—मैं नहीं देख सकता।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "मुझे गोवर्धन पर्वत से यहाँ पर कौन ले आया? मैं तो कृष्ण की लीलाएँ देख रहा था, किन्तु अब मैं उन्हें नहीं देख सकता।

इहाँ हैते आजि मुइ गेनु गोवर्धने ।
देखोँ,—यदि कृष्ण करेन गोधन-चारणे ॥ १०६॥

इहाँ हैते आजि मुइ गेनु गोवर्धने ।
देखों,—यदि कृष्ण करेन गोधन-चारणे ॥ १०६॥

इहाँ हैते—यहाँ से; **आजि**—आज; **मुइ**—मैं; **गेनु**—गया था; **गोवर्धने**—गोवर्धन पर्वत पर; **देखों**—मैं ढूंढ रहा था; **यदि**—यदि; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **करेन**—करते हैं; **गोधन-चारणे**—गौवें चराना।

अनुवाद

"आज मैं यहाँ से गोवर्धन पर्वत पर यह देखने गया था कि क्या कृष्ण वहाँ अपनी गौवें चरा रहे हैं?

गोवर्धने चड़ि' कृष्ण बाजाइला वेणु ।
गोवर्धनेर चौदिके चरे सब धेनु ॥ १०७॥

गोवर्धने चड़ि' कृष्ण बाजाइला वेणु ।
गोवर्धनेर चौदिके चरे सब धेनु ॥ १०७॥

गोवर्धने—गोवर्धन पर्वत पर; **चड़ि'**—चढ़ने; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **बाजाइला वेणु**—बाँसुरी बजाते; **गोवर्धनेर**—गोवर्धन पर्वत के; **चौ-दिके**—चार दिशाओं में; **चरे**—चर रही थीं; **सब**—सब; **धेनु**—गौवें।

अनुवाद

"मैंने कृष्ण को गोवर्धन पर्वत पर चढ़ते और चर रही गौवों से घिरे उन्हें अपनी बाँसुरी बजाते देखा।

वेणु-नाद शुनि' आइला राधा-ठाकुराणी ।
सब सखी-गण-सङ्गे करिया साजनि ॥ १०८॥

वेणु-नाद शुनि' आइला राधा-ठाकुराणी ।
सब सखी-गण-सङ्गे करिया साजनि ॥ १०८ ॥

वेणु-नाद—बाँसुरी की ध्वनि; **शुनि'**—सुनकर; **आइला**—आयीं; **राधा-ठाकुराणी**—श्रीमती राधारानी; **सब**—सब; **सखी-गण-सङ्गे**—गोपी सखियों के साथ; **करिया साजनि**—सुन्दर वस्त्र धारण करके।

अनुवाद

"कृष्ण की बाँसुरी की ध्वनि सुनकर श्रीमती राधारानी अपनी सारी गोपी-सखियों के साथ उनसे मिलने वहाँ पर आईं। वे सब सुन्दर वस्त्र धारण किये थीं।

राधा लञा कृष्ण प्रवेशिला कन्दराते ।
सखी-गण कहे मोरे फूल उठाइते ॥ १०९ ॥

राधा लञा कृष्ण प्रवेशिला कन्दराते ।
सखी-गण कहे मोरे फूल उठाइते ॥ १०९ ॥

राधा लञा—श्रीमती राधारानी को साथ लेकर; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **प्रवेशिला**—प्रविष्ट हुए; **कन्दराते**—गुफा में; **सखी-गण**—गोपियों ने; **कहे**—कहा; **मोरे**—मुझे; **फुल**—फूल; **उठाइते**—तोड़ने के लिए।

अनुवाद

"जब कृष्ण तथा श्रीमती राधारानी एकसाथ गुफा में प्रविष्ट हो गये, तब अन्य गोपियों ने मुझसे कुछ फूल तोड़ने को कहा।

हेन-काले तुमि-सब कोलाहल कैला ।
ताहाँ हैते धरि' मोरे इहाँ लञा आइला ॥ ११० ॥

हेन-काले तुमि-सब कोलाहल कैला ।
ताहाँ हैते धरि' मोरे इहाँ लञा आइला ॥ ११० ॥

हेन-काले—तभी; **तुमि-सब**—तुम सबों ने; **कोलाहल कैला**—कोलाहल किया; **ताहाँ हैते**—वहाँ से; **धरि'**—पकड़कर; **मोरे**—मुझे; **इहाँ**—यहाँ; **लञा आइला**—ले आये।

अनुवाद

"तभी तुम सबों ने कोलाहल किया और मुझे तुम वहाँ से इस स्थान पर ले आये।

কেনে বা আনিলা মোরে বৃথা দুঃখ দিতে ।
পাঞা কৃষ্ণের লীলা, না পাইনু দেখিতে'' ॥১১১॥

केने वा आनिला मोरे वृथा दुःख दिते ।
पाञा कृष्णेर लीला, ना पाइनु देखिते" ॥१११॥

केने—क्यों; **वा**—तब; **आनिला**—ले आये; **मोरे**—मुझे; **वृथा**—व्यर्थ ही; **दुःख दिते**—पीड़ा देने के लिए; **पाञा**—पाकर; **कृष्णेर लीला**—कृष्ण की लीला; **ना पाइनु देखिते**—मैं उन्हें देख न सका।

अनुवाद

"तुम लोग मुझे व्यर्थ की पीड़ा देकर यहाँ क्यों ले आये? मुझे कृष्ण की लीलाओं का दर्शन करने का अवसर मिला था, किन्तु मैं उन्हें देख न पाया।"

এত বলি' মহাপ্রভু করেন ক্রন্দন ।
তাঁর দশা দেখি' বৈষ্ণব করেন রোদন ॥১১২॥

एत बलि' महाप्रभु करेन क्रन्दन ।
ताँर दशा देखि' वैष्णव करेन रोदन ॥११२॥

एत बलि'—यह कहकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करेन क्रन्दन**—रोने लगे; **ताँर दशा**—उनकी दशा; **देखि'**—देखकर; **वैष्णव**—वैष्णव; **करेन रोदन**—रोने लगे।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु रोने लगे। जब समस्त वैष्णवों ने उनकी यह दशा देखी, तो वे भी रोने लगे।

হেন-কালে আইলা পুরী, ভারতী,—দুই-জন ।
দুঁহে দেখি' মহাপ্রভুর হ-ইল সম্ভ্রম ॥১১৩॥

हेन-काले आइला पुरी, भारती,—दुइ-जन ।
दुँहे देखि' महाप्रभुर ह-इल सम्भ्रम ॥ ११३ ॥

हेन-काले—उसी समय; **आइला**—आये; **पुरी**—परमानन्द पुरी; **भारती**—ब्रह्मानन्द भारती; **दुइ-जन**—दो जन; **दुँहे देखि'**—दोनों को देखकर; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **ह-इल**—हुआ; **सम्भ्रम**—आदर का भाव जाग्रत।

अनुवाद

उसी समय परमानन्द पुरी तथा ब्रह्मानन्द भारती आये। उन्हें देखकर श्री चैतन्य महाप्रभु में कुछ-कुछ आदर का भाव जाग्रत हुआ।

নিপট্ট-বাহ্য হ-ইলে প্রভু দুঁহারে বন্দিলা ।
মহাপ্রভুরে দুই-জন প্রেমালিঙ্গন কৈলা ॥ ১১৪ ॥

নিপট্ট-বাহ্য হ-ইলে প্রভু দুঁহারে বন্দিলা ।
মহাপ্রভুরে দুই-জন প্রেমালিঙ্গন কৈলা ॥ ১১৪ ॥

নিপট্ট-বাহ্য—পূর্ণ বাহ্য চেতনা; **হ-ইলে**—लौट आई तब; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **দুঁহারে**—उन दोनों की; **বন্দিলা**—वन्दना की; **মহাপ্রভুরে**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **দুই-জন**—दोनों गुरुजनों ने; **প্রেম-আলিঙ্গন কৈলা**—स्नेहपूर्वक आलिंगन किया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की पूर्ण बाह्य चेतना लौट आई और उन्होंने तुरन्त ही उन दोनों की वन्दना की। तब उन दोनों गुरुजनों ने स्नेहपूर्वक महाप्रभु का आलिंगन किया।

প্রভু কহে,—'দুঁহে কেনে আইলা এত দূরে'? ।
পুরী-গোসাঞি কহে,—'তোমার নৃত্য দেখিবারে' ॥ ১১৫ ॥

প্রভু কহে,—'দুঁহে কেনে আইলা এত দূরে'? ।
পুরী-গোসাঞি কহে,—'তোমার নৃত্য দেখিবারে' ॥ ১১৫ ॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **दुँहे**—आप दोनों से; **केने**—क्यों; **आइला**—आये; **एत दूरे**—इतने दूर; **पुरी-गोसाञि कहे**—पुरी गोस्वामी ने कहा; **तोमार नृत्य**—तुम्हारा नृत्य; **देखिबारे**—देखने।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने पुरी गोस्वामी तथा ब्रह्मानन्द भारती से कहा, "आप दोनों इतनी दूर क्यों आये?" पुरी गोस्वामी ने उत्तर दिया, "तुम्हारा नृत्य देखने के लिए।"

লজ্জিত হ-ইলা প্রভু পুরীর বচনে ।
সমুদ্র-ঘাট আইলা সব বৈষ্ণব-সনে ॥ ১১৬ ॥

लज्जित ह-इला प्रभु पुरीर वचने ।
समुद्र-घाट आइला सब वैष्णव-सने ॥ ११६ ॥

लज्जित—लज्जित; **ह-इला**—हुए; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पुरीर वचने**—परमानन्द पुरी के शब्दों से; **समुद्र**—समुद्र की; **घाट**—स्नान करने की जगह; **आइला**—आये; **सब वैष्णव-सने**—समस्त वैष्णवों के साथ।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने यह सुना, तो वे कुछ लज्जित हुए। तब वे समस्त वैष्णवों के साथ समुद्र-स्नान करने गये।

স্নান করি' মহাপ্রভু ঘরেতে আইলা ।
সবা লঞা মহা-প্রসাদ ভোজন করিলা ॥ ১১৭ ॥

स्नान करि' महाप्रभु घरेते आइला ।
सबा लञा महा-प्रसाद भोजन करिला ॥ ११७ ॥

स्नान करि'—स्नान करने के बाद; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **घरेते आइला**—घर लौटे; **सबा लञा**—सब को अपने साथ लेकर; **महा-प्रसाद**—जगन्नाथजी का शेष प्रसाद; **भोजन करिला**—भोजन किया।

अनुवाद

समुद्र-स्नान के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु समस्त भक्तों के साथ अपने घर लौट आये। तब सबों ने जगन्नाथजी को अर्पित किये गये भोजन का शेष ग्रहण किया।

এই ত' কহিলুঁ প্রভুর দিব্যোন্মাদ-ভাব ।
ব্রহ্মাও কহিতে নারে যাহার প্রভাব ॥ ১১৮॥

এइ त' कहिलुँ प्रभुर दिव्योन्माद-भाव ।
ब्रह्माओ कहिते नारे याहार प्रभाव ॥ ११८॥

एइ त'—इस तरह; **कहिलुँ**—मैंने वर्णन किया है; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **दिव्य-उन्माद-भाव**—दिव्य उन्माद भावों का; **ब्रह्माओ**—ब्रह्माजी भी; **कहिते नारे**—वर्णन नहीं कर सकते; **याहार**—जिसके; **प्रभाव**—प्रभाव का।

अनुवाद

इस तरह मैंने श्री चैतन्य महाप्रभु के दिव्य उन्माद भावों का वर्णन किया है। यहाँ तक कि ब्रह्माजी भी उनके प्रभाव का वर्णन नहीं कर सकते।

'চটক'-গিরি-গমন-লীলা রঘুনাথ-দাস ।
'গৌরাঙ্গ-স্তব-কল্পবৃক্ষে' করিয়াছেন প্রকাশ ॥ ১১৯॥

'चटक'-गिरि-गमन-लीला रघुनाथ-दास ।
'गौराङ्ग-स्तव-कल्पवृक्षे' करियाछेन प्रकाश ॥ ११९॥

चटक-गिरि—चकट पर्वत नाम का बालू का टीला; **गमन**—जाने की; **लीला**—लीला; **रघुनाथ-दास**—रघुनाथ दास गोस्वामी; **गौराङ्ग-स्तव-कल्प-वृक्षे**—*गौराङ्ग स्तव कल्पवृक्ष* नामक ग्रन्थ; **करियाछेन प्रकाश**—वर्णन किया है।

अनुवाद

रघुनाथ दास गोस्वामी ने अपनी पुस्तक 'गौराङ्ग स्तव कल्पवृक्ष' में चटक पर्वत नामक बालू के टीले की ओर भागने की श्री चैतन्य महाप्रभु की लीला का अत्यन्त रोचक वर्णन किया है।

সমীপে নীলাদ্রেশ্চটক-গিরি-রাজস্য কলনাদ্
অয়ে গোষ্ঠে গোবর্ধন-গিরি-পতিং লোকিতুমিতঃ ।
ব্রজন্নস্মীত্যুক্ত্বা প্রমদ ইব ধাবন্নবধৃতো
গণৈঃ স্বৈর্গৌরাঙ্গো হৃদয় উদয়ন্মাং মদয়তি ॥ ১২০॥

समीपे नीलाद्रेश्चटक-गिरि-राजस्य कलनाद्
अये गोष्ठे गोवर्धन-गिरि-पतिं लोकितुमितः ।
व्रजन्नस्मीत्युक्त्वा प्रमद इव धावन्नवधृतो
गणैः स्वैर्गौराङ्गो हृदय उदयन्मां मदयति ॥ १२० ॥

समीपे—निकट; **नीलाद्रेः**—जगन्नाथ पुरी; **चटक**—चटक नामक; **गिरि-राजस्य**—बालू के टीलों का राजा; **कलनात्**—देखने पर; **अये**—ओह; **गोष्ठे**—गायों को चराने की जगह; **गोवर्धन-गिरि-पतिम्**—गोवर्धन, सारे पर्वतों का राजा; **लोकितुम्**—देखने के लिए; **इतः**—यहाँ से; **व्रजन्**—जाकर; **अस्मि**—मैं; **इति**—इस प्रकार; **उक्त्वा**—कहने; **प्रमदः**—पागल की तरह; **इव**—जैसे; **धावन्**—दौड़े; **अवधृतः**—पीछे गये; **गणैः**—सभी भक्त; **स्वैः**—स्वयं; **गौराङ्गः**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हृदये**—हृदय में; **उदयन्**—उदय होता; **माम्**—मेरे; **मदयति**—उन्मत्त।

अनुवाद

"जगन्नाथ पुरी के निकट चटक पर्वत नामक एक विशाल बालू का टीला है। इस पर्वत को देखकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "ओह! मैं गोवर्धन पर्वत देखने के लिए व्रज भूमि जाऊँगा!" तब वे उसकी ओर पागल की तरह दौड़ने लगे और सारे वैष्णव उनके पीछे दौड़े। यह दृश्य मेरे हृदय में उदित होता है और मुझे उन्मत्त बना देता है।"

तात्पर्य

यह श्लोक *गौराङ्ग स्तव कल्पवृक्ष* (८) से उद्धृत हुआ है।

এবে প্রভু যত কৈলা অলৌকিক-লীলা ।
কে বর্ণিতে পারে সেই মহাপ্রভুর খেলা? ॥ ১২১ ॥

এবে প্রভু য়ত কৈলা অলৌকিক-লীলা ।
কে বর্ণিতে পারে সেই মহাপ্রভুর খেলা? ॥ ১২১ ॥

এবে—अब; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **य्रत**—वह सभी; **कैला**—किया; **अलौकिक-लीला**—असामान्य लीला; **के**—कौन; **वर्णिते पारे**—वर्णन कर सकता है; **सेइ**—वे; **महाप्रभुर खेला**—श्री चैतन्य महाप्रभु के खेल।

अनुवाद

भला ऐसा कौन है, जो श्री चैतन्य महाप्रभु की समस्त असामान्य लीलाओं का सही-सही वर्णन कर सके? ये सब मात्र उनके खेल हैं।

সঙ্ক্ষেপে কহিয়া করি দিগ্দরশন ।
যেই ইহা শুনে, পায় কৃষ্ণের চরণ ॥ ১২২॥

সঙ্ক্ষেপে কহিয়া করি দিক্ দরশন ।
যেই ইহা শুনে, পায় কৃষ্ণের চরণ ॥ ১২২॥

सङ्क्षेपे—संक्षिप्त में; **कहिया**—वर्णन किया; **करि दिक् दरशन**—मैंने संकेत करने के उद्देश्य से; **येइ**—जो कोई; **इहा**—यह; **शुने**—सुनेगा; **पाय**—पायेगा; **कृष्णेर चरण**—भगवान् कृष्ण के चरणकमलों की शरण।

अनुवाद

मैंने उनकी दिव्य लीलाओं का संकेत करने के उद्देश्य से ही उनका संक्षिप्त वर्णन किया है। तो भी जो कोई उन्हें सुनेगा, वह निश्चित रूप से भगवान् कृष्ण के चरणकमलों की शरण प्राप्त करेगा।

শ্রী-রূপ-রঘুনাথ-পদে যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ১২৩॥

শ্রী-রূপ-রঘুনাথ-পদে যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ১২৩॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—चरणकमलों की; **यार**—जिनको; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ; **कहे**—वर्णन किया; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए तथा सदैव उनकी कृपा की कामना करते हुए तथा उनके चरणचिह्नों पर चलकर, मैं कृष्णदास श्री चैतन्य चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत अन्त्यलीला के अन्तर्गत श्री चैतन्य महाप्रभु का कृष्ण विरह-भाव शीर्षक चौदहवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ।